वर्ष 29 | श्रावण-भादवा | अगस्त - 2024 | अंक 08 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048870/29/30/1982
पोस्टल मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 06/2024-2026

मूल्य 10/- रुपये

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 8 तारीख को

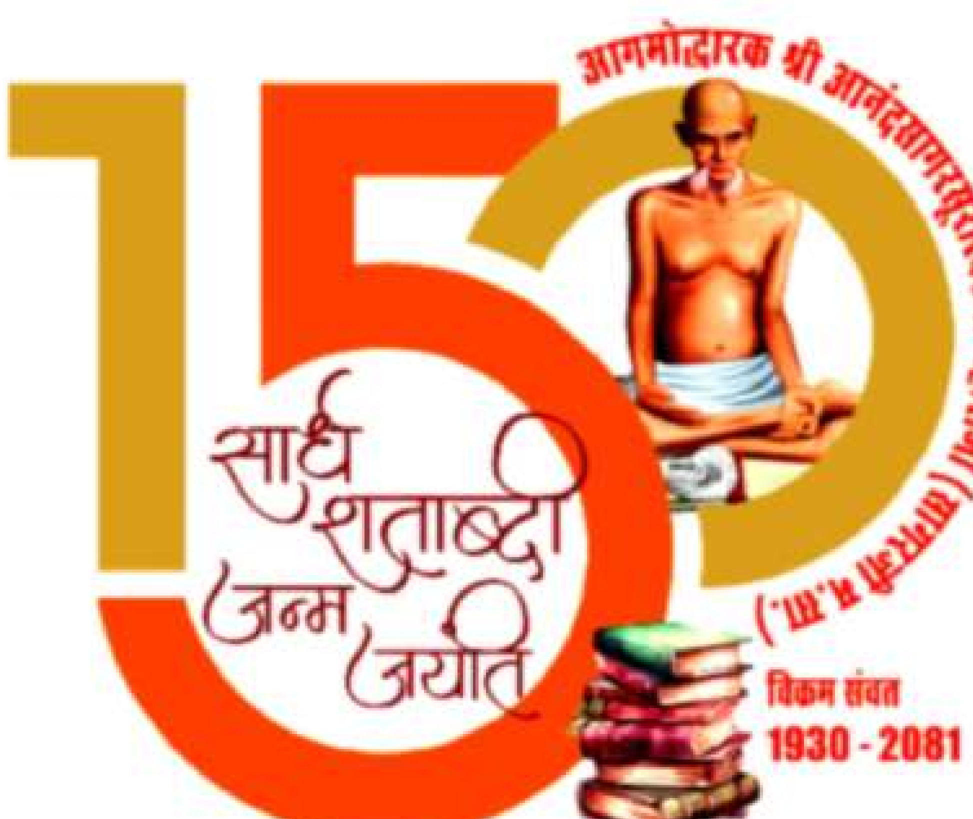

परम श्रद्धेय पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य देवेश

श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजा विशेषांक

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन

उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

दम्भो मुक्तिलतावह्निर्दम्भो राहुः क्रियाविधौ।
दौर्भाग्यकारणं दम्भो दम्भोऽध्यात्मसुखार्गला ॥

- श्री अध्यात्मसार ग्रंथ

अर्थात- दंभ-मुक्तिरुपी बेल को जलानेवाली आग है, दंभ-क्रियारुपी चंद्र को गलनेवाला राहु है, दंभ-दुर्भाग्यका कारण है और दंभ-अध्यात्म के सुख से दूर रखनेवाली बेड़ी है।

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

परम पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

इमं सरीरं अणिच्चं, असुइं असुइसंभव।
असासयावासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं ॥

यह शरीर अनित्य है, अशुचिपूर्ण है। इसमें आत्मा का निवास अशाश्वत है। यह दुःख एवं क्लेशों का भोजन है। **- उत्तरा. सूत्र, 19.13**

पाथेय

हमें प्रत्येक मुर्हूत जानना चाहिये, कि सब कुछ पाने के लिए कैसे सब कुछ छोड़ा जाता है। हमें इस योग्य बनना चाहिए कि हम अतीत को छोड़ सकें एक मृत देह के समान और एक नवीन एवं महान भावी चेतना से हो सके संयुक्त। हे प्रभु! इसी के लिए मेरी अभीप्सा तुम्हारी ओर उन्मुख है वह तुम्हें अति निर्मल दर्पण बनकर, सर्व पदार्थों में करना चाहती है प्रतिबिम्बित। उसकी इस कामना से तुम्हारा अचल एवं मधुर आनन्द प्रगति करने की एक अद्भूत गहन शक्ति के साथ हो गया है सम्मिलित और अब वह शक्ति एक शान्त एवं सुनिश्चित संकल्प बनकर मेरी समस्त अन्तर-बाह्य चेतना में हो गई है रुपांतरित। हे नाथ! मैं अपने हृदय के गहन प्रेम के साथ बन गई हूं तुम्हारी अनन्य नम्र सेविका और सभी मूर्त्त एवं अमूर्त्त पदार्थों के अंदर हो गई हूं, तुमसे अभिन्न, एक रुप।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-29 श्रावण-भादवा अगस्त 2024 अंक-8

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 3
2- विषय सूची 4
3- आगम साधक परम श्रद्धेय पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेवश्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा-(संपादकीय)-डॉ.सुभाष जैन,एक अद्भूत छःरि पालित संघ 5-6
4- कलेक्टर मैडम,आप''मेकअप''क्यों नहीं करती ..? सागरजी अर्थात् जंगम पुस्तकालय 7-8
5- अयोध्या का जैनत्व इतिहास 9
6- करुणासागर आ.पू.श्री सागरानंद सूरीश्वरजी म.सा.-श्रीमती प्रभा जैन 10
7- सूर्य नगरी में आगमोद्धारकश्री को सूरीपद 11
8- आगमधरसूरी आगम वाचनादाता आगमिक प्रवर व्याख्याता सागरजी महाराजा की कुछ विशेषताएं, पूज्यपाद श्री आगमोद्धारक श्री सागरजी की जन्म कुण्डली 12
9- आगमोद्धारकश्री का बचपन, सागरजी बनने की तैयारी कपड़्वंज से श्री सिद्धगिरी की गोद में 13-14
10- सागर और शिलात्कीर्ण एवं ताम्रपत्र आगम, धर्मवीर हेमचंद्रभाई का स्टेटमेंट 15
11- आगमोद्धारकश्री और आगम ग्रंथ-डॉ. सुभाष जैन 16
12- श्रीसागरजी और संस्था 17
13- आओ ! प्रत्याख्यान करें....डॉ. दिलीप धींग, परमेष्ठिस्वरुप ॐकार संकिर्तन 18
14- लोकान्त तक ऊर्ध्वगमन कर्म मुक्ति के पश्चात- शांतिलाल सगरावत असली संपत्ति सादगी ही है 19
15- हम प्रगतिशील बनें...! - परम पूज्य गुरुदेव, पुण्य से मिलता है.... क्या ? क्या ? 20
16- लघु शांति स्तोत्र की कथा और उसका प्रभाव, गुरुदेव की सीख, करोड़ों की कीमती का हीरा, श्री मगनभाई भगत 21-22
17- आईये जैन धर्म को जाने-पुद्गल 23
18- सागर का जन्म महोत्सव -सूरत में एक अद्भूत प्रसंग, सागर और शिलात्कीर्ण एवं ताम्रपत्र आगम 24
19- 45 आगम वर्गीकरण 25
20- पूज्य आगमोद्धारकश्री के उपदेश से स्थापित विशिष्टसंस्थाएं ज्ञानमंदिर, उपाश्रय आदि, त्रिपुटी 26
21- भरहेसर सज्झाय, कथ्यम्-पूज्य सागरजी म.सा. 27-28
22- दस प्रकार के भवनापति देव, आठ प्रकार के व्यतंर देव 29
23- जीवदया फण्ड (विज्ञापन) 30
24- वर्गपहेली- 351 - जयंतीलाल जैन,रतलाम 31
25- ज्ञान गंगोत्री- 351-आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा.नीति-उपार्जित धान्य 32
26- शासन-समाचार 33-41
27- हमारे तीज त्यौहार,सादर आमंत्रण,सारे देश में आगमोद्धारक,प्रतिनिधि नियक्त करना है 42

संपादकीय

आगम साधक परम श्रद्धेय पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेवश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजा

जिस राष्ट्र धर्म और समाज में पूजनीय व्यक्तियों का सम्मान, स्मरण नहीं होता वह समाज भावी पीढ़ी के लिये कोई पदचिन्ह नहीं छोड़ता। पूजनीय व्यक्ति संसार में रहते हुए अपने सम्मान अभिवंदन की कोई कामना नहीं रखते है, वे प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से अपने गौरव को बढ़ाने वाले किसी कार्य की प्रेरणा नहीं देते और विदित हो जाने पर इस प्रकार के आयोजनों में रुचि न दिखाते हुए दूर ही रहते है, किंतु समाज के प्रबुद्ध वर्ग का यह दायित्व है कि वह परम श्रद्धेय अपने गुरु भगवंत का उनके जीवनकाल में या संसार से प्रयाण कर जाने के उपरांत गुरुदेव के व्यक्तित्व, कृतित्व को तटस्थ भाव से जगत के सामने उजागर कर भावी पीढ़ी के लिये अपने गुरुदेव के लिये सम्मान गौरव और अभिवंदन के लिये श्रद्धा निवेदित करें। हमारे यहां यह परम्परा रही है कि हमारे परम श्रद्धेय आदरणीय और प्रात:स्मरणीय जैसे गुरुदेव के साधु कार्यों को उनकी गौरव गाथा के गान के साथ उसे भ्क्तो के समक्ष उजागर किया जावे। हमने भी इसी अनाविल एवं सात्विक परम्परा का पालन करते हुए 36 गुण भंडारी, समता साधना और सरलता की प्रतिमूर्ति, प्रखर मेघा के धनी परम पूज्य आचार्य देवेश गुरुदेव **पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेवश्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा** के स्मरण को चिरस्थायी बनाने के प्रयत्न हेतु यह विशेषांक प्रकाशित किया है।

वात्सल्य के धनी, चारित्र शिरोमणि, समता मूर्ति आचार्यश्री, मकसद और मंजिल के लिये सदा प्रयत्नशील रहे आचार्यश्री इस बात को भली भांति जानते थे कि लोगों के जीवन और जगत में बेशुमार बुराईयां और विसंगतियां है, वे समाज में ऐसा वातावरण निर्मित करना चाहते थे जहां लोगों का आचरण उच्च हो और कथनी - करनी का अनुकरण करती दिखाई दें। आपने संयम जीवन की एक लम्बी यात्रा की थी, संपूर्ण संयम जीवन में संकल्प के साथ शासन प्रभावना करते हुए आचरण और उच्चारण को एक स्वर प्रदान किया। ऐसे महापुरुष ही दिव्यता को प्राप्त करते है। जैन जगत के इतिहास में ऐसे महापुरुषों की एक समृद्ध शृंखला और अविच्छन्न परम्परा रही है इसी परम्परा की कड़ी में स्व-पर कल्याणरत संत शिरोमणि धर्म मंगल के आधार स्तम्भ, वात्सल्य दिवाकर **पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेवश्री आनंदसागर सूरीश्वर जी महाराजा** भी एक ऐसे ही महामना संत प्रवर थे । अनुशासित एवं अनुशासन के चहेते, प्रवचन पद, साधना और सरलता की प्रतिमूर्ति श्रमण संस्कृति के उन्नायक प्रखर मेघा के धनी आचार्यश्री का व्यक्तित्व विद्वता और सरलता, बुद्धिमता और निश्छलता, महानता और सहजता, कठोरता और कोमलता जैसे परस्पर विरोधी आयामों से निर्मित है, आचार्यश्री का हृदय मृदु एवं संकल्प चट्टान की तरह अटल, चिंतन में हिमगिरी सी ऊंचाई और भावों में सागर सी गहराई थी। जनकल्याण की भावना से ओतप्रोत आचार्यश्री का मन व्यष्टि एवं समष्टि का कल्याण कब और किस विधि से हो इस चिंतन से रत रहता था, लोगों के कल्याण के लिये, देश के विभिन्न आंचलों में हजारों किलोमीटर की पदयात्राएं करते हुए मार्ग में आये समागत लाखों-लाखों के लिये सत्य, अहिंसा, प्रेम, मानवता और भाईचारे का पाठ पढ़ाकर मानवीय गुणों के साथ धर्म पर चलने का मंगल संदेश सुनाया था। हम उन्हें श्रद्धा और आस्था के साथ स्मरण करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

उपसर्ग विजेता आचार्यश्री एक धर्म विशेष के आचार्य होने के बाद भी उनमें साम्प्रदायिकता का कोई चिन्ह नहीं था। आप समन्वयवादी विचारधारा के उदारमना संत प्रवर थे। प्रभु श्री महावीर स्वामीजी की दिव्य उद्घोषणा **"अप्पा सो परमप्पा"** आचार्यश्री के जीवन का सिद्धांत था, सदियों पूर्व आपश्री के पूर्ववर्तीय जैन संतों ने भरत वसुन्धरा पर जिस प्रकार की धर्म प्रभावना की थी वैसी ही धर्म प्रभावना करते हुए आपश्री ने देह को त्यागा है। सूरत की वह पावन भूमि जहां आपश्री का अग्नि संस्कार किया गया था, वहां की धूल आपश्री के पवित्र आचरण युक्त चरण कमलों के स्पर्श से चंदन की महक का अनुभव कराती हैं। सच मानो तो वहां के वातावरण को देखकर लगता है कि मानों एक आदि योगी चिरसमाधी में ध्यानस्थ होकर बैठा हुआ हमें मंगल आर्शीवाद प्रदान कर रहा है।

पूज्यश्री के गुरुभक्तों ने पूज्यश्री के व्यक्तित्व, कृतित्व का विवरण विशेषांक में किया है। हमारा प्रयास केवल इतना है कि जैन जगत को यह ज्ञात हो सके कि पूज्य आचार्यश्री ने अपने संयम जीवन के 59 वर्ष जिन शासन की प्रभावना में जिस तन्मयता निष्ठा और आस्था के साथ व्यतीत किये है वह वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के लिये प्रेरणास्पद बन सके और उनकी तप, जप, **आगम** साधना और शासन प्रभावना को लोग हृदयगम कर सके। पूज्यश्री के जैन अजैनों के लिये किये गये विपुल कार्य को देखकर विस्मय होता है किंतु विस्मय के साथ आनंद और गौरव का भी अनुभव होता है कि जैन जगत में ऐसे भी महामना संत प्रवर थे जो जीवन में समग्रत: जैन शासन की सेवा साधना और

आराधना में लीन रखने की क्षमता रखते थे, ऐसे त्यागी तपस्वी साधकों के कार्यो से विश्व कल्याणकारी जैन शासन को संजीवनी मिलती है, संरक्षण मिलता है।

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेवश्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा के सत्कर्मों को जैन जगत के समक्ष प्रकट करने का यह स्थुल प्रयास मात्र है। आपश्री के कर्म-सौंदर्य को उद्घाटित करने की मै समझता हूं, यह शौभन शैली है। विशेषांक के प्रकाशन की मुख्य प्रेरक शक्ति तो पूज्य आचार्यश्री का महत्व स्वीकार और पूज्य बुद्धि ही है परन्तु इस सद्उ-ेश्य को पूर्णाहुति की ओर ले जाने का कार्य करने का मार्गदर्शन और प्रेरणा हमें पूज्यश्री के कार्यो से प्राप्त हुई है हमने पूज्यश्री के 150 वें जन्म दिवस पर गुरुदेव के प्रति दायित्व बोध के साथ पूर्ण करने का संकल्प लिया और पूज्य आचार्यश्री के प्रति पूर्ण समर्पित जीवन अर्पित की भावना रखते हुवे प्रतिवर्ष के अनुसार विशेषांक प्रकाशित किया है। लेखकों का अतुलनीय सहयोग और सहकार इस विशेषांक को प्रकाशित करने मे मिला है । विशेषांक प्रकाशन को गुरुदेव आचार्यश्री के प्रति अपनी सच्ची आस्था और भक्ति प्रकट कर लेख भेजने वालों ने प्रकाशन को सहज और सरल बना दिया। वास्तव में यह इन्हीं सबके प्रयत्नों का फल है कि प्रस्तुत विशेषांक सुन्दर-सुपाठ्य सामग्री परिपूर्ण होकर आपके सामने है। इसमें सबकी अथ से लेकर इति तक की परम गुरु भक्ति, श्रद्धा, आस्था और साधना व्याप्त है।

हम जानते है कि **पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेवश्री आनंदसागर सूरीश्वर जी महाराजा** को समर्पित यह विशेषांक उनके गौरव के अनुकूल नहीं है, हम इस विशेषांक को समर्पित करते हुए अपने भीतर संकोच का अनुभव कर रहे हैं, पर सम्पूर्ण जैन जगत इसे हमारी आस्था के कमल फूल की तरह स्वीकार कर हम पर अनुग्रहित करें। हम तो यह विश्वास दिला सकते हैं कि हमारी श्रद्धा, निष्ठा, प्रेम, सम्मान पूज्य बुद्धि और भावना में कहीं कमी या त्रुटि नहीं हैं। भेंट की वस्तु का महत्व उनके भाव में निहित होता है। सात्विक भाव से किया गया यह तुच्छातितुच्छ समर्पण भी पूज्य गुरुदेवश्री को कभी अग्राह्य नहीं होगा। हमें विश्वास है कि श्रद्धेय पूज्यवर आचार्यश्री जहां कहीं भी होंगे हमारे द्वारा उनको समर्पित विशेषांक को स्वीकार कर हमें कृतार्थ करेंगे।

कपड़वंज की भूमि पर एक सितारा चमका।
आगे बढ़कर रत्न बना वो सारे जैन जगत का।
आगम के उद्धार से वो कहलाये आगमोद्धारक।
कोटि-कोटि हो वंदन तुमको ओ शासन के नायक।

पूज्य आगमेध्दारकश्री के पतित पावन तत्वावधान में सूत्र के पठन पाठन की शास्त्रीय योग्यता की प्राप्ति के लिये कराये गये उपधान तपः-

	स्थान	संवत्
१-	येवला	१९६५
२-	सूरत	१९६६
३-	सूरत	१९७५
४-	सिद्धगिरीराज	१९७६
५-	रतलाम	१९७८
६-	रतलाम	१९७९
७-	सादड़ी	१९८२
८-	बंबई	१९८८
९-	सूरत	१९८९
१०-	पालीताना	१९९१
११-	पालीताना	१९९४
१२-	पालीतानरा	१९९६
१३-	पालीताना	१९९७
१४-	पालीताना	१९९८

एक अद्भुत छःरि पालित संघ

विक्रम संवत 1976 में सूरत के प्रसिद्ध श्रेष्ठ श्री जीवणचंद्र नवलचंद्र जवेरीजी द्वारा पूज्यपाद जीवंत आगम ज्ञानकोष के सागर पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज की पवित्र पावन निश्रा में श्री सिद्धाचल महातीर्थ पालीताणा का संघ निकाला था। इस संघ के बाद आप पूज्यश्री का मंगल चातुर्मास सिद्धगिरी में ही हुआ। उस समय याने आज से लगभग 85 वर्ष पूर्व इस चातुर्मास में दो लाख रुपये से अधिक का खच्र हुआ था। इस संघ में 700 श्रावक श्राविका और साधु-साध्वीजी थे। सूरत में महावद 8 को संघ ने प्रस्थान किया था, जिसने चैत्य वद 2 के दिन श्री सिद्धाचल की पावन रज को स्पर्श किया था।

कलेक्टर मैडम, आप ''मेकअप'' क्यों नही करती...?

मलप्पुरम की जिला कलेक्टर सुश्री रानी सोयामोई.... कॉलेज के छात्रों से बातचीत करती है-

उन्होंने कलाई घड़ी के अलावा कोई आभूषण नहीं पहना था। सबसे ज्यादा छात्रों को आश्चर्य हुआ कि उन्होंने ''फेस पावडर'' का भी इस्तेमाल नहीं किया। भाषण अंग्रेजी में था। उन्होंने केवल एक या दो मिनिट ही बोला, लेकिन उनके शब्द दृढ़ संकल्प से भरे थे। फिर बच्चों ने कलेक्टर से कुछ सवाल पूछे-

प्रश्न- आपका नाम क्या है ?

मेरा नाम रानी है, सोयामोई मेरा पारिवारिक नाम है। मैं झारखंड की मूल निवासी हूं। .... और कुछ पूछना है ?

दर्शकों में से एक दुबली-पतली लड़की खड़ी हुई।

''पूछो, बच्चे....''

प्रश्न- ''मैडम, आप मेकअप क्यों नहीं करती ?''

कलेक्टर का चेहरा अचानक पीला पड़ गया। उनके पतले माथे पर पसीना आ गया। उनके चेहरे की मुस्कान फीकी पड़ गई। दर्शक अचानक चुप हो गए।

उन्होंने टेबल पर रखी पानी की बोतल खोली और थोड़ा सा पानी पिया। फिर उन्होंने धीरे से छात्रा को बैठने का इशारा किया। फिर वह धीरे से बोलने लगी।

''तुमने एक परेशान करने वाला सवाल पूछा है। यह ऐसा सवाल है जिसका जवाब एक शब्द में नहीं दिया जा सकता। मुझे जवाब में तुम्हें अपनी जीवन कहानी सुनानी है। मुझे बताओ कि क्या तुम मेरी कहानी के लिए अपनी कीमत दस मिनट निकालने को तैयार हो ? ''

''तैयार....''

मेरा जन्म झारखंड के एक आदिवासी इलाके में हुआ था। कलेक्टर ने रुककर दर्शकों की ओर देखा।

''मेरा जन्म कोडरमा जिले के आदिवासी इलाके में एक छोटी सी झोपड़ी में हुआ था, जो ''मीका '' खदानों से भरा हुआ था।'' मेरे पिता और माता खनिज थे। मेरे दो बड़े भाई और एक छोटी बहन थी। हम एक छोटी सी झोपड़ी में रहते थे जिसमें बारिश होने पर पानी टपकता था।

मेरे माता-पिता कम वेतन पर खदानों में काम करते थे क्योंकि उन्हें कोई और काम नहीं मिल पाया था। यह बहुत गंदा काम था। जब मैं चार साल की थी, तब मेरे पिता, माता और दो भाई कई बीमारियों के कारण बिस्तर पर पड़े थे। उस समय उन्हें यह नहीं पता था कि यह बीमारी खदानों में मौजूद घातक ''मीका धूल'' को अंदर लेने से होती है। जब मैं पांच साल की थी, मेरे भाई बीमारी से मर गए।''

एक छोटी सी आह भरकर कलेक्टर ने बोलना बंद कर दिया और अपने रुमाल से अपनी आंखें पौंछ ली।

ज्यादातर दिनों में हमारा भोजन सादा पानी और एक या दो रोटियां हुआ करता था। मेरे दोनों भाई गंभीर बीमारी और भूख के कारण इस दुनिया से चले गए। मेरे गांव में, डॉक्टर तो छोड़िए, स्कूल भी नहीं था। क्या आप ऐसे गांव की कल्पना कर सकते है जहां स्कूल, अस्पताल या शौचालय न हो, बिजली न हो ? एक दिन मेरे पिता ने मेरा भूखा, चमड़ी और हड्डियों से लथपथ हाथ पकड़ा और मुझे टिन की चादरों से ढंकी एक बड़ी खदान में ले गए। यह एक अभ्रक की खदान थी जिसने समय के साथ बदनामी हासिल कर ली थी।

यह एक पुरानी खदान थी जिसे खोदा गया और खोदा गया, जो अंतहीन रुप से पाताल में फैली हुई थी। मेरा काम नीचे की छोटी-छोटी गुफाओं में रेंगना और अभ्रक अयस्क इकट्ठा करना था। यह केवल दस साल से कम उम्र के बच्चों के लिए ही संभव था।

अपने जीवन में पहली बार, मैंने पेट भर रोटियां खाई। लेकिन उस दिन मुझे उल्टी हो गई। जिस समय मुझे प्रथम श्रेणी में होना चाहिए था, मैं अंधेरे कमरों में अभ्रक इकट्ठा कर रही थी, जहां मैं ''जहरीली धूल'' में सांस ले रहा था। कभी-कभार ''भूस्खलन '' में दुर्भाग्यपूर्ण बच्चों का मर जाना असामान्य नहीं था। और कभी-कभी कुछ घातक बीमारियाँ से भी मर जाते थे, दिन में आठ घंटे काम करने के बाद, आप कम से कम एक बार के भोजन के लिए कमा पाते थे। मैं भूख और हर दिन जहरीली गैसों के सांस लेने के कारण दुबली और निर्जलित हो गई थी।

एक साल बाद मेरी बहन भी खदान में काम करने लगी। जैसे ही वे (पिता) थोड़े ठीक हुए, ऐसा समय आया कि मेरे पिता, माँ, बहन और मैं एक साथ काम करते थे और हम बिना भूख के रह सकते थे।

लेकिन किस्मत ने हमें एक दूसरे रुप में परेशान करना शुरु कर दिया था। एक दिन जब मैं तेज बुखार के कारण काम पर नहीं जा रही थी, अचानक बारिश हुई। खदान के नीचे काम करनेवाले श्रमिकों पर खदान गिरने से सैकड़ों लोग मारे गए। उनमें मेरे पिता, माँ और बहन भी थे।

रानी की दोनों आंखों से आंसू बहने लगे। दर्शकों में हर कोई सांस लेना भी भूल गया। कई लोगों की आंखें आँसूओं से भर गई।

''आपको याद रखना होगा कि मैं सिर्फ छह साल की थी।आखिरकार मैं सरकारी अगाती मंदिर पहुंची। वहां मेरी शिक्षा हुई। मैंने अपने गांव से ही अपनी पहली अक्षर-पद्धति सीखी थी। आखिरकार यहां कलेक्टर आपके सामने है।

आप सोच रहे होंगे कि इस का और इस बात का क्या संबंध है ? कि मैं मेकअप का इस्तेमाल नहीं करती।'' उसने दर्शकों की तरफ देखते हुए कहा।

''अपनी शिक्षा के दौरान ही मुझे एहसास हुआ कि उन दिनों अंधेरे में रेंगते हुए मैंने जो सारा अभ्रक इकट्ठा किया था, उसका इस्तेमाल मेकअप उत्पादों में किया जा रहा था। अभ्रक पहला प्रकार का मोती जैसा सिलिकेट खनिज है। कई बड़ी कॉस्मेटिक कंपनियों द्वारा पेश किए जाने वाले खनिज मेकअप में, आपकी त्वचा के लिए सबसे चमकीला रंग बहुरंगी अभ्रक से आता है, जिसे 20 हजार छोटे बच्चे अपनी जान जोखिम में डालकर निकालते हैं। गुलाब की कोमलता उनके जले हुए सपनों, उनके बिखरते जीवन और चट्टानों के बीच कुचले गए उनके मांस और खून के साथ आपके गालों पर फैलती है। खदानों से बच्चों के हाथों से उठाए गए लाखों डॉलर के अभ्रक का इस्तेमाल आज भी किया जाता है। हमारी सुंदरता को बढ़ाने के लिये।''

''आप ही बताइए। मैं अपने चेहरे पर मेकअप कैसे लगाऊं ? मैं अपने भाईयों की याद में पेट भरकर कैसे खाऊं जो भूख से मर गए ? मैं अपनी माँ की याद में महंगे रेशमी कपड़े कैसे पहनूं जिन्होंने कभी फटे कपड़ों के बारे में सपने में भी नहीं सोचा था ?''

जब रानी चली गई तो दर्शक अनजाने में ही खड़े हो गये, उनके होठों पर हल्की मुस्कान थी, आंखों में आंसू पोंछे बिना, उनका सिर ऊंचा था।

(झारखंड में अभी भी उच्चतम गुणवत्ता वाला अभ्रक खनन किया जाता है। 20 हजार से अधिक छोटे बच्चे स्कूल जाने के बिना वहां काम करते हैं। वे मर जाते है, कुछ भूस्खलन में और कुछ बीमारी से....)

कई साल बाद....

वह महिला कलेक्टर, भारत गणराज्य की पहली नागरिक बनी ''महामहिम '' ''द्रोपदी मुरुमु ''

''भारत गणराज्य की राष्ट्रपति।''

सागरजी अर्थात् जंगम पुस्तकालय

जैन धर्म विशाल एवं महान है...!

अनेकविध देशों के विद्वानों ने जैन धर्म का अध्ययन करने का सदैव प्रयास किया है। बात उन दिनों की है जब जर्मनी से डॉ. क्राउन उर्फ सुभद्रादेवी का भारत आगमन हुआ था। जैन धर्म का अध्ययन करना उसका प्रमुख उद्देश्य था। आचार्यश्री धर्मसूरीजी म.अपने शिष्यों के साथ बम्बई में विचरण कर रहे थे। जर्मनी की विदुषी क्राऊन आचार्यश्री के दर्शनार्थ प्रायः सविशेष जाती थी और अपनी शंकाओं का सदैव समाधान करती रहती थी। उसका अध्ययन-मनन चल रहा था। अध्ययन करते करते एक दिन उसके मन में शंका की सूक्ष्म लहर लहराई कि जैन धर्म तो पूर्ण अहिंसा का उपदेशक है। तो फिर जैन मंदिरों में विशेषतया मुख्य गर्भगृह के द्वार पर दोनों तरफ हिंसक सिंह की आकृतियाँ क्यों रहती है?

उसने अपनी शंका का निराकरण करने हेतु तत्कालीन विद्वानों.... आचार्यो से सम्पर्क किया। परन्तु उसकी शंका का समाधान कहीं से नहीं हो पाया था। समय यूं ही गुजर रहा था। डॉ. क्राऊन का अध्ययन जारी था। परन्तु शंका का क्रीड़ा प्रायः छुलबुलाता रहता था। ऐसे में किसी ने कहा-'आप पूज्य आचार्य देवश्री सागरानन्द सूरीजी म.सा.के पास क्यों नहीं जाती? वहां आपकी हर शंका का समाधान-निराकरण हो जायेगा।'

डॉ.क्राऊन ने पूज्यसागरजी महाराज का पता लगाया। पूज्य सागरजी महाराज अहमदाबाद दोसीवाड़ा की पोल में उन दिनों विराजमान थे। लगभग विक्रम संवत् 1987 की साल था।

डॉ. क्राऊन अहमदाबाद आई। पूज्य सागरजी म. को वन्दन कर विनय भाव से उसने अपनी शंका प्रस्तुत की। 'गुरूदेव...! सम्पूर्ण अहिंसक देव के मंदिर में दोनों ओर मुंह फैलाये हिंसक सिंह की आकृतियाँ क्यों होती है?'

तत्क्षण उत्तर देते हुए सागरजी महाराज ने कहा-'वे राग-द्वेष की सूचक आकृतियाँ है। संसार में राग और द्वेष ही प्राणीमात्र को अपने फौलादी पंजे में फंसाकर भटकने के लिये विवश करते है। जिनेश्वर देव ने राग और द्वेष पर विजय प्राप्त कर उन्हें अपना गुलाम बनाया है। उसी का वे प्रतीक है। डॉ.क्राऊन आनंद से झूम उठी। उसके मन का समाधान.... निराकरण हो गया था। तभी उसने दूसरा प्रश्न उपस्थित किया- लेकिन इसका आधार ग्रन्थ कौन सा है गुरूदेव...?'उपमिति भव प्रपंचा...!' पूज्य सागरजी महाराज ने उत्तर देते हुए कहा- 'सिद्धर्षि गणि ने लिखा है- 'राग द्वेषों सिंह व्याघ्रौ', राग और द्वेष सिंह व्याघ्र है।'

फिर तो डॉ. क्राऊन ने अनेक प्रश्न किये,जिसके उत्तर पूज्य सागरजी महाराज देते गये और प्रत्येक उत्तर के साथ संबंधित आधार ग्रंथ बताते गये। फलतः डॉ. क्राऊन के मुंह से सहसा शब्द प्रस्फुटित हो गये। **'पूज्य सागरजी महाराज तो जंगम पुस्तकालय है।'**

अयोध्या का जैनत्व इतिहास

अयोध्या में श्रीराम मंदिर का निर्माण होते इस देश के ही नहीं विश्व के करोड़ हिन्दूओं की आस्था का सम्मान हुआ है। अयोध्या के प्रति हिन्दूओं की आस्था में बहुत वृद्धि हुई है। आप जानते है न जैन रामायण भी है।

अयोध्या लाखों जैनों के लिये भी परम वंदनीय तीर्थ है इसका कारण यह है कि अयोध्या श्री ऋषभदेवजी, श्री अजीतनाथजी, श्री अभिनंदनस्वामीजी, श्री सुमतिनाथजी और अनंतनाथ स्वामी इन पांच तीर्थंकर परमात्मा की जन्म भूमि भी है।

जिस भूमि पर परमात्मा का एक कल्याणक होता है वह भूमि पवित्र महातीर्थ कहलाती है, अयोध्या में तो पांच तीर्थंकर परमात्मा के 18 कल्याणक हुए है, इसलिए अयोध्या जैनों के लिये परम महातीर्थ है।

अयोध्या नगरी कितनी प्राचीन है, कौन सी संस्कृति का शुभारंभ अयोध्या से हुआ था, गंगा नदी का नाम जाहन्हवी और भागीरथी कैसे पड़ा ? ऐसे अनेक प्रश्नों का जवाब वैदिक और जैन धर्म के ग्रंथों में बतलाया गया है।

श्री नाभिराजा कुलकर की पत्नी मरुदेवी के पुत्र याने श्री ऋषभदेवजी के पुत्र भरत चक्रवर्ती के नाम पर हमारे देश का नाम भारत पड़ा। यह बात वैदिक धर्म के भगवत पुराण ऋणवेद, पजुर्वेद, मार्कन्ईय पुराण और वायु महापुराण तथा जैन धर्म के अनेक ग्रंथों में लिखी हुई है। राजा ऋषभ अयोध्या के राजा तथा विश्व के प्रथम राजा के रुप में जाने जाते हैं। युगलिककाल पूर्ण होने से कल्पवृक्ष से मनवांछित प्राप्त होनेवाला फलबंध हो गया। इसलिये राजा श्री ऋषभ ने लोगों का असी मसी और कृषि की शिक्षा दी।

स्त्रीयों की 64 कला पुरुषों की 74 कला तथा शिल्प आदि कला विश्व में सर्वप्रथम बार ऋषभ ने अयोध्या से ही सिखाई।

राजा ऋषभ के बाद उनकी गद्दी पर भरत आये उसमें यह देश भारत के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इनके बाद इनके पुत्र आदित्य यश अयोध्या की गादी पर बैठे, आदित्य याने सूर्य। इससे उनका कुल सूर्यवंशी कहलाया। भगवान श्री राम के पिता दशरथ सूर्यवंशी थे और उनका कुल ईश्वाकुल कहलाता है। इसके बाद असंख्य राजा हुए। बाद में जितशत्रु राजा हुए। उन्होंने अपने पुत्र अजीत को गादी पर बैठाकर दीक्षा ले ली थी। अजीत राजा ने बहुत समय तक राज्य करने के बाद दीक्षा ली थी जो बाद में श्री अजीतनाथ नाम के दूसरे तीर्थंकर बने इसके बाद उनके पिता के भाई सगर चक्रवर्ती अयोध्या की गादी पर बैठे उनके जहनुकुमार आदि 50000 पुत्र थे एक बार यह सभी पुत्र श्री ऋषभदेव की निर्वाण भूमि अष्टापद तीर्थ जो अयोध्या से ईशान दिशा में 12 योजन की दूरी पर था वहां गये।

वहां उन्होंने भरत चक्रवर्ती के द्वारा बनाये गये रत्नमय सिंह निषधा के दर्शन किये। अष्टापद तीर्थ की सुरक्षा के लिये जहनकुमार आदि 50 हजार पुत्रों ने गंगा नदी के प्रवाह में खाई गोदकर अष्टापद के पास लाये, इसलिये गंगा नदी का नाम जाहन्हवी कहलाया। इसके कारण नाग निकाय के देव को कष्ट हो गया इसलिये ज्वलनप्रभ नाम के नाग ने 50 हजार पुत्रों को जला दिया। सिर्फ भागीरथ और भीम नाम के दो पुत्र बच गये।

गंगा का पानी अष्टापद पर भर जाने से अनेक जनपदों में बहुत विनाश हुआ। सागर चक्रवर्ती ने उन जनपदों को बचाने के लिये अपने पुत्र भागीरथ को दंडरत्न देकर गंगा के प्रवाह को समुन्द्र ले जाने की आज्ञा दी, भागीरथ ने बहुत कठोर परिश्रम किया इसीलिये आज अतिराय पुरुषार्थ के लिये भागीरथ पुरुषार्थ, शब्द का उपयोग किया जाता है। भागीरथ राजा ने गंगा का प्रवाह समुन्द्र तक पहुंचा दिया इसलिये गंगा नदी का नाम भागीरथ हुआ। आधार विक्रम संवत् 732 में संघदास गणि लिखित ''वासुदेव हींडी'' ग्रंथ।

ऐसी अनेक घटनाएं अयोध्या के संबंध में है।

स्वास्थ्य समुच्चय ग्रंथ में अयोध्या ईक्ष्वाकु भूमि कौशला उत्तर कौशला विनिता अबध्या, रामपुरी, साकेत जैसे नाम से भी जाना जाता है।

अयोध्या में कटरा मोहल्ले में स्थित मंदिर में श्री अजीतनाथ प्रभु की प्रतिमा विराजित है जिनके नाम से पालीताना नाम पड़ा, ऐसे श्री पादलिप्त सूरीश्वरजी महाराज का जन्म भी अयोध्या में हुआ था।

– आधार : श्री विमलचंद वेदमुथा सम्पादित णमो तिक्ष्यस्स, यह है रामजन्म भूमि अयोध्या नगरी की अनोखी कथा।

करुणा सागर आ.पू.श्री सागरानंद सूरीश्वरजी म.सा.

❊ श्रीमती प्रभा जैन, देवास

जिन शासन की पुष्पवाटिका में रंग बिरंगे विभिन्न फूल विकसित होते है और शाम को मुरझा जाते है वैसे ही इस भूमंडल पर प्रतिदिन हजारों आत्माएं जन्म लेती है और आयु पूर्ण कर इस संसार सागर से बिदा हो जाते है परन्तु इस धरा पर कुछ पवित्र आत्माएं ऐसी होती है जो इस विशाल संसार में हमेशा-हमेशा के लिये अमर हो जाती है। ऐसे ही आध्याम योगी, करुणा के भंडार पूज्य श्री 1008 आचार्य भगवंत सागरानंद सूरीश्वरजी म.सा.जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व से महामानव बन गए, उनकी जीवन गाथा हमेशा के लिए चिरस्मरणीय बन गई।

आप आदर्श व्यक्तित्व के धनी, कुशाग्र बुद्धि, करुणा, दया, सहिष्णुता, निर्भयता, ओजस्विता आदि समस्त गुणों से परिपूर्ण थे। आपके बचपन का नाम हेमचंद्र था, आपश्री के पिताजी का नाम मगनलालजी व माताश्री का नाम यमुना देवी था। माता-पिता के धार्मिक संस्कार उनमें बचपन से ही दृष्टिगोचर होते थे। मात्र 16 वर्ष की उम्र में दीक्षित होकर परिवार व जिनशासन का नाम रोशन किया व अपने जीवन को तपोमय बना दिया।

मैंने आपके आदर्श जीवन के बारे में ''आगमोद्धारक'' पत्रिका के माध्यम से पढ़ा और आपके गुणों की छबि, आपकी महानता की छबि, मन मस्तिष्क में समा गई। आपके जीवन में कई प्रसंग हैः-

1- ज्ञान के तो आप सागर थे, आप कितने महान थे कितने ज्ञानी थे इसका अंदाज हम इस वाक्य से लगा सकते है जो मैंने एक बुक में पढा था एक बार आपका अहमदाबाद की ओर विहार था, अहमदाबाद में उस समय आचार्य पूज्य श्री नेमिसूरीजी म.सा.ने अपने शिष्यों से कहा था- ''सागर आ रहा है, जितना ज्ञान ले सको, ले लेना, वह तो साक्षात गागर के सागर है, उनसे जितना ज्ञान उलीचारो, उतना ही कम है।

2- इतना ही नहीं आप संस्कृत के भी महान विद्वान पंडित थे, आपने एक बार हिन्दू विश्विद्यालय बनारस में वहां के पंडितों के आग्रह से संस्कृत में धाराप्रवाह प्रवचन दिए। आपके प्रवचनों से प्रभावित होकर वहां के पंडितों ने आपको ''**शारदानंद**'' कहकर पुकारा। वास्तव में आप सरस्वती के साक्षात नर अवतार थे। इतनी प्रबुद्ध विद्ववंता होने के बाद भी आप अपने शिष्यों को विद्ववता का अहसास नहीं होने देते थे।

3- एक बार जर्मनी की विदुषी क्राउन का भारत आगमन हुआ, जैन धर्म का अध्ययन करना उनका प्रमुख उद्देश्य था। डॉ. क्राउन ने पूज्य आचार्यश्रीजी का पता लगाकर आपके दर्शन किये व कुछ प्रश्नों के उत्तर पाकर समाधान भी किया। डॉ. क्राउन आपके उत्तरों से आपके व्यक्तित्व से इतनी प्रभावित हुई कि आपको ''**जंगम पुस्तकालय**'' की उपाधि दी।

4- जब आपश्री के गुरुदेव श्री झवेरसागरजी म.सा. का स्वर्गवास हो गया तो आप बहुत निराश हो गये, ''मुझे वाचना कौन देगा।'' मैं आगम अध्ययन करना चाहता हूं। एक रात्रि को आपको स्वप्न आया ''चिंता न करो बस'' तुम तो पूर्वजन्म के श्रुतधर हो'' तुमको जिन आगमों का अध्ययन करना हो उन्हें उच्च आसन पर विराजमान कर गुरु की तरह वंदना करना और वारुणा संदिसाहु, वायणा लड्शु, वायणा प्रशाद, करावशोजी का आदेश मानकर आगम पढ़ना प्रारम्भ कर देना।

फिर क्या था, आपने आयंबिल किया व दशवैकालिक सूत्र का अध्ययन किया, यह भी उनकी गुरुभक्ति-

ध्यान मूले गुरोमूर्ति, पूजामूलं गुरुर्पदं।
मंत्र मूलं गुरुर्वाक्यं, मोक्ष मूलं गुरुकृपा॥

आपका जीवन चन्द्रमां की भांति शीतल, प्रकाशमान था, उज्जवल था,दैदिप्यमान था। आगम ग्रंथों पर आपने 7 वाचनाओं के द्वारा 2,33,200 श्लोकों का अर्थसहित वाचन कर जिनशासन पर महान उपकार किया है। ऐसे आगमवेत्ता आगमोद्धारक, आगम रत्नाकर, आगम ज्योतिधर्र, ध्यानस्थ, अधिपुरुष के चरणों में सादर सविधि श्रद्धायुक्त मेरा कोटि-कोटि वंदन नमन। आपका यश और कीर्ति आज भी अमर है और युगों तक अमर रहेगी। किसी ने ठीक ही कहा है-

सूरत में कीर्ति भली, बिना पंख उड़ जाय।
सूरत तो जाती रहे, कीर्ति भली न जाय॥

सूर्य नगरी में आगमोद्धारकश्री को सूरीपद

शिखरजी तथा अंतरीक्ष तीर्थ में मिली विजय ने पूज्य आगमोद्धारक पंन्यास प्रवर श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजों को जैन जगत में भारी प्रसिद्धी मिल गई थी, सारे देश में पूज्यश्री को बहुत ही आदर और सम्मान के साथ देखा जाने लगा था। अंतरिक्ष तीर्थ से पूज्यश्री ने सूर्यनगरी (सूरत) की ओर विहार आरंभ किया, यह जानकारी मिलते ही सूरत में अपार उत्याह का वातावरण बन गया, चारों ओर पूज्यश्री के कार्यो की चर्चा चलने लगी थी। पूज्य आगमोद्धारकश्री को आचार्य पद पर विराजमान करने की चर्चा ने और उत्साह बढ़ा दिया था। पूज्यश्री ने सूरत में तीन चातुर्मास कर रखे थे, इन चातुर्मास में पूज्यश्री की विद्वता शास्त्रज्ञान का अत्यधिक प्रभाव श्रीसंघ में था ही, शासन सेवा करने की सूरतवासियों में जानकारी थी। जब पूज्यश्री ने सूरत छोड़ा था तो सूरतवासी यही समझते थे कि पूज्यश्री को जाने के बाद सूर्य नगरी का धर्म सूर्य अस्त हो गया है और अब जब आगमोद्धारक श्री वापस सूरत लौट रहे थे तो सूरतवालों के मन में आचार्यश्री का आचार्य पद प्रदान करने का अपार उत्साह उमंग पैदा हो गया था, इस दिव्य प्रसंग को देखने की लालसा सबके दिल में मचलने लगी थी। पूज्य आगमोद्धारकश्री को आचार्य पद प्रदान करने का संयोग बन गया था पर इन महात्मा को इस बात का कोई बहुत मतलब नहीं था क्योंकि इन महात्मा के प्रत्येक अंग में धर्मप्रेम और सिर्फधर्मप्रेम ही बसा हुआ था। आपश्री को आचार्य पदवी मिले या न मिले उन्हें इसकी कोई इच्छा नहीं थी, पूज्यश्री की शासन सेवा आचार्य पदवी से कहीं बड़ी थी। आपने तो जैन जगत के सामने यह सिद्ध कर दिया था कि जैन धर्म के तत्व कितने महान है। धर्म की गहरी जानकारी लोगों को प्रदान करने गुरू को अब जब गुरू भक्ति का मौका सामने आया तो गुरूभक्त अपना धर्म कैसे भूल सकते थे? और सूरत का संघ इस को भूल जाये यह तो हो ही नहीं सकता।

सूरत श्रीसंघ ने आचार्य पद प्रदान करने का दृढ़ निश्चय कर तैयारियां आरंभ कर दी। आचार्य पदवी से सूरत में यादगार समय आने वाला था, एक ऐसा प्रसंग जो कभी न भुलाये, जिसका वर्णन करना संभव नहीं हो सकता है, क्योंकि सूरतवासियों ने जो शासन और गुरू भक्ति दर्शाई थी वह अद्भूत थी। पूज्यश्री के प्रति जो अपार भक्ति का भाव सूरतवासियों में था उसे कोई भी शब्दों से, किसी भी कलम से लिखना संभव नहीं है।

सूरतवासियों ने आचार्य पदवी की तैयारी से आकाश-पाताल, रात दिन एक कर दिया था इस पुण्यवंत अवसर की तैयारी में सब जी जान से जुड़ गये थे। श्री नेमुभाई की वाड़ी में इस प्रसंग पर श्री सिद्धाचल महातीर्थ, सुस्वर्णमय मेरू पर्वत, श्री सम्मेद शिखरजीकी रचना बनाई गई थी। यह रचना इतनी सुन्दर बनाई गई थी कि देखनेवालों को लगता था कि वह वास्तव में तीर्थ क्षेत्र में ही है। अद्भूत अनोखे और अपार उत्साह से भरे वातावरण में सभी धार्मिक रीति रीवाज और परम्पराओं को ध्यान में रखकर बाल ब्रह्मचारी पूज्य आचार्य देवेश श्री विजय कमल सूरीश्वरजी महाराज ने अपने सुहस्त इस आचार्य पद प्रदान धर्मोत्सव को शोभायमान बनाते हुए अपने सुहस्ते चारित्र नायक आगमोद्धारकश्री को आचार्य पद प्रदान किया। उस दिन से एक समय पूर्व के हेमचन्द्र भाई, मुनि आनंदसागर और पंन्यास प्रवर श्री आनंदसागरजी अब आचार्य श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज बन गये तब से लेकर आज तक आपश्री का गौरववंत नाम धर्म सेवा और शास्त्र उद्धारक के रूप में अखंडिक रूप से निरन्तर चल रहा है। यह भी निश्चित है कि आगमोद्धारकश्री की परम पवित्र कीर्ति, तेजस्वीता जैन धर्म में हमेशा-हमेशा अमरता के रूप में विद्मान रहेगी।

अपूर्व आनंद से आगमोद्धारकश्री की आचार्य पदवी का यह धर्मोत्सव विक्रम सवंत् १९७४ की वैशाख शुक्ल दसमी के दिन सम्पन्न हुआ। पदवी कार्यक्रम सम्पन्न होने के उपरांत परम पूज्य आगमोद्धारक आचार्य देवेश श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज (श्री सागरजी महाराज) ने मुंबापुरी अर्थात् मुंबई की ओर विहार किया था।

आगमधरसूरी आगम वाचनादाता आगमिक प्रवर व्याख्याता सागरजी महाराजा की कुछ विशिष्टताऐं

1. 821457 श्लोक प्रमाण में 175 छोटे बड़े आगम प्रकरण ग्रंथों, सैद्धांतिक ग्रंथों आदि का सुंदर सम्पादन।

2. 70 हजार श्लोक प्रमाण आगमिक प्राकृत ग्रंथों ओर अनेक विविध संकलना ग्रंथों का अभिनव सर्जन।

3. 60 से 70 हजार श्लोक प्रमाण में 150 ग्रंथों प्रकरणों का मौलिक सृजन।

4. 20 हजार श्लोक प्रमाण गुजराती, हिन्दी साहित्य के 25 ग्रंथों का सृजन।

5. 2,00,000 (दो लाख) श्लोक प्रमाण आगम प्रकरण ग्रंथों की आरस (पत्थर) की 60 गुणा 24 की शिला पर उकेरवाना।

6. दो लाख श्लोक प्रमाण आगम आदि ग्रंथ को 24 गुणा 30 आकार के लेजर कागज पर सर्वांग शुद्ध रूप से मुद्रण करवाना।

7. प्राचीन 80 ग्रंथों पर प्रौढ़ संस्कृत भाषा में 15000 श्लोक प्रमाण विशिष्ठ प्रस्तावना लेखन।

8. वि.सं. 1971 से 1977 के मध्य सात आगम वाचना में कुल 2,33,200 श्लोक प्रमाण वाचना प्रदान की।

9. आगम मंदिर, पालीताना प्रतिष्ठा विक्रम संवत 1999 महावद 5

10. आगम मंदिर, सूरत प्रतिष्ठा विक्रम संवत 2004 महासुद 3

11. अर्द्ध पद्मासन स्थिति विक्रम संवत 2006 वैशाख सुद 5 दोपहर 3बजे से वैशाख वद 5 दोपहर 4.32 तक सूरत में।

पूज्यपाद श्री आगमोध्दारक श्रीसागरजी की जन्म कुडण्ली

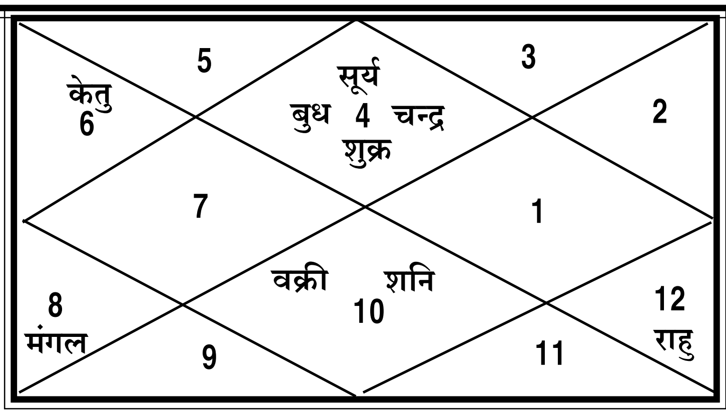

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
3	3	7	3	6	3	9	11	5
15	8	28	2	4	3	26	18	15
7	45	52	49	26	34	20	55	55
24	55	30	21	37	51	24	29	29

आगमोद्धारक श्री का बचपन

धर्मनिष्ठ श्री मगनभाई और जमनादेवी की सुयोग्य देख-रेख में हेमचंद्रभाई और मणिलाल की व्यावहारिक रीति से धर्मिष्ठ संस्कारों के बीजारोपण के साथ लालन पालन हुआ था।

दोनों बच्चों को श्री नमस्कार महामंत्र, चौबीसी तीर्थ परमात्मा श्री गौतमस्वामी आदि महापुरूषों श्री स्थुलभद्रजी, श्री जम्बुस्वामीजी, श्री विजय सेठ सेठानी धन्ना शालिभद्र आदि उत्कृष्ट आत्मबलवाले आदर्श महापुरूषों के बारे में जानकारी देने के साथ मंदिर की सम्पूर्ण विधि क्रिया के साथ बच्चों के चित्र को प्रसन्न करने वाली प्रभु भक्ति का परिचय कराया गया था तथा उपाश्रय में महाराज के पास ले जाकर वंदन करना सिखाया। वासक्षेप आदि से त्याग भावना बहुमान करने की रीति नीति से सक्रिय बनाने के प्रयास किये गये थे। पूजा आदि में साथ ले जाकर बच्चों को मगनभाई संस्कारों का सिंचिन कर रहते थे।

श्री हेमचंद्रभाई से दो वर्ष बड़े श्री मणिलालजी की बालकाल की प्रवृत्तियां हेमचंद्रभाई के जीवन को सिंचन करने में बहुत सहयोगी रही।

श्री मणिलाल जब खेलते हुए घर के दरवाजे तक जाने लगे तब हेमचंदभाई और जमनादेवी के खोले में माताजी से धर्म संस्कार पा रहे थे।

धीरे-धीरे समय के अंतराल से हेमचंद्रभाई ने पांव से चलना आरंभ कर दिया, कई बार मंदिरों की घंटियों की आवाज सुनकर ध्वजादण्ड देखकर आनंदित होते हेमचंद्रभाई ऐसे लगते कि उन्हें कोई पूर्व जन्म का स्मरण याद आ गया है।

पिता मगनभाई दोनों भाईयों को पूजा के कपड़े बनवा दिये थे, उपाश्रय से आने वाले साधु-साध्वी के पास ले जाते, मोहल्ले में गोचरी के लिये आने वाले साधु-साध्वी को देखकर माँ को बुलाते और कहते हमारे घर बुलाओ, मैं गोचरी व्होराऊंगा।

धीरे-धीरे बड़े होते देख दोनों बच्चों माता-पिता के आनंद में वृद्धि कर रहे थे, परिवार में बड़ी सुख-समृद्धि को देखकर माता-पिता यह अनुभव करते कि यह सब बालक हेमचंद्र की विशिष्ट पुण्य प्रतिमा का ही चमत्कार है। हेमचंद्रभाई की सुन्दर मुख छवि देख कुटुंब परिवारवाले प्रसन्न होते जमनाबहन ने प्रभु भक्ति स्तवन तथा सज्झाई सुनकर बच्चों को प्रसन्नता और धार्मिक संस्कार दिये थे

पूज्यश्री का विद्याभ्यास

पूर्व जन्म की गुण समृद्धि का साथ होने से हेमचंद्र भाई विनम्रता और सद्गुण तो जन्मों से ही साथ आये थे, हेमचंद्रभाई अपनी चेष्टा बोलने तथा क्रिया करने से ऐसे लगते कि सब कुछ उन्हें पहले से ही ज्ञात है।

पूर्व जन्म के संस्कारों को देखकर पहले से पाठशाला जानेवाले बड़े भाई मणिलाल के साथ शाला में विद्याभ्यास के लिये हेमचंद्रभाई की तैयारी आरंभ हुई, मगनभाई ने शुभ मुहूर्त में हेमचंद्रभाई को पाठशाला भेजने के लिये पंडित से विनंती की, नये वस्त्र पहराकर मगनभाई सर्व प्रथम श्री वासुपूज्य स्वामी के पैतृक मंदिर लेकर गये वहां गंहुली के साथ बालक के हस्ते सवा रूपया भण्डार में डलवाया तथा मगनभाई ने नवकार महामंत्र का उच्चारण बालक के मुख से करवाने का प्रयत्न किया तो बालक ने भी अपनी पूरी शक्ति से महामंत्र बोला, पाठशाला पहुंचने पर शिक्षक ने हेमचंद्र के हाथों से सरस्वती देवी के चित्रों पर गुलाब के फूलों की माला चढ़वाई तथा सरस्वती देवी की प्रतिमा पर नीचे बैठकर वंदन करवाया, मगनभाई ने हेमचंद्र भाई के हाथों से शिक्षकों को पगड़ी, श्रीफल और नगदी अपर्ण करवाये, शिक्षकों ने हेमचंद्रभाई को आर्शीवाद

दिये। हमारे चरित्रनायक हेमचंद्रभाई मन इच्छा से पाठशाला जाने लगे तथा विद्यार्जन में रसपूर्वक आगे बढ़ने लगे। शिक्षक बच्चों को ज्ञान की बातें बतलाने शिक्षक ने एक दिन कक्षा में कहा कि- सूर्य के बिना दिन नहीं निकलता उसी तरह गणित के बगैर मनुष्य भी बेकार है। हेमचंद्रभाई ने शिक्षकों की बात को गंभीरता से ध्यान से सुनते थे।

भारतीय संस्कृति की यह विशेषता नहीं है कि हर एक-दो सदी के मध्य में धार्मिकता-अध्यात्मिक और नैतिक बल से परिपूर्ण दिव्य महारूपेण का अवतार इस अवनितल पर होता आया है, ऐसे ही गुणों का दर्शन हेमचंद्रभाई के जीवन में दृष्टिगोचर होने लगे थे। माताजी जमनाबाई संसारी सगे संबंधियों के साथ संसार के मोह की बातें करती तो हेमचंद्र भाई उनका उग्र विरोध करते जब हेमचंद्र भाई 9-10 वर्ष के थे तब एक बार उन्हें हाथ के नीचे बाजु में गुमड़ा (गठान) हो गई, शुरूआत में तो खूब सहन शक्ति रखी, दो-चार दिन तो किसी से कुछ भी नहीं कहा पर एक दिन तीव्र वंदना के साथ बुखार भी आ गया। जमना बहन के घर का उपचार किया। सेक करा। दर्द कम तो हो गया पर बेचैनी कम नहीं हुई। आसपास वाली बहनों के कहने पर अन्य उपचार भी किये पर वेदना कम नहीं हुई।

6-7 दिन तक यह स्थिति रही परन्तु उपाश्रय सामायिक करने जाने की प्रवृत्ति चालू ही रही। मगनभाई धार्मिक प्रवृत्ति के थे, सांसारिक प्रवृत्तियों में ध्यान नहीं देते थे। मां दवा आदि दे रही थी। एक बार जमनाबाई अस्वस्थ हो गई तो हेमचंद्र भाई ने दवा तैयार की, मगनभाई देव-दर्शन कर उपाश्रय में सामायिक में ही थे हेमचंद्रभाई भी मंदिर चले आये, बुखार से जमनाबाई बेहाल हो गई और हरे प्रभु। हो प्रभु! बोलकर कहरा रही थी तभी हेमचंद्र भाई दौड़कर घर आये तो माताजी ने गुस्से में एक जोरदार तमाचा मार दिया, तमाचे का हेमचंद्र भाई पर बहुत असर हुआ और उससे लम्बे समय से हुआ गुमड़ा फूट गया। सब मवाद बाहर निकल गया, उग्र वेदना होने के बाद भी हेमचंद्र भाई ने आंखों से आंसु नहीं निकले और न ही माताजी पर गुस्सा किया और बहुत ही धीर भाव से दर्द को सहन कर लिया।

जमनाबहन ने भी बच्चों की अजब कोटि की सहन शीलता देख धीरज देखकर स्वदोष पर मंथन किया और मातृ हृदय में वात्सल्य से हेमचंद्र भाई को गले लगा लिया।

इतने में ही मगनभाई घर पहुंच गये। हेमचंद्र भाई के आंसु देखे तथा गुमड़ा से मवाद निकलते देख हेमचंद्र भाई ने पिता से बस यही कहा कि- गुमड़ा अचानक फूट गया है। पिता ने जमना बहन को आवाज लगाई कि हेमचंद्र का गुमड़ा फूट गया है। इसे साफ कर दवाई लगा दो, जब जमना बहन ने यह सुना कि हेमचंद्र भाई ने पिता से यह कह दिया कि गुमड़ा अपने आप फूट गया तो जमना बहन चकित रह गई। शर्म संकोच से उनका सिर नीचे हो गया।

सागरजी बनने की तैयारी कपड़वंज से श्री सिद्धगिरी की गोद में

पिताश्री से जब दीक्षा की आज्ञा मिल ही गई थी तब हेमचंद्रभाई के दिमाग में सब कुछ स्थिर था। घर से निकलकर कहां किस दिशा में जाऊंगा यह विचार करने की उन्हें कोई जरूरत नहीं थी इसलिये आपने कपड़वंज छोड़कर सीधे सौराष्ट्र का मार्ग पकड़ा। हेमचंद्रभाई को बचपन से ही तीर्थाधिराज श्री शत्रुंजय गिरीराज की छत्र छाया में जाने की भावना रहती थी। श्री सिद्धगिरी पर दादा के दरबार में पहुंचने का आनंद उन्हें जितना मिलता था वैसा आनंद उन्हें कहीं नहीं मिलता था। यहां पहुंच कर वे यही सोचने लगे कोई जैन साधु विचरते मिल जाये, कोई आचार्य से भेंट हो जाये तो उनके पास दीक्षा ग्रहण कर सकूं। पूज्यश्री सागरजी म.सा. के सिद्धगिरी के प्रेम ने ही शायद आगम मंदिर की स्थापना का योग बनाया होगा। पूज्यश्री ने वरदहस्ते ही पालीताना में सर्वप्रथम बार आगम मंदिर की स्थापना हुई थी।

चोरी

सात वर्षीय बालक को माँ पीटे जा रही थी। पड़ोस की एक महिला ने जाकर उसे बचाया। पूछने पर उसकी माँ ने बताया कि यह मंदिर में चढ़ौती के आम तथा पैसे चुराकर लाया है, इसीलिए पीट रही हूं इसे। उक्त महिला ने बड़े प्यार से पूछा– ''क्यों बेटा! तुम तो बड़े प्यारे बालक हो। चोरी तो गंदे बच्चे करते हैं, तुमने ऐसा क्यों किया ?''

बार–बार पूछने पर सिसकियों के बीच से बालक बोला– ''माँ भी तो रोज ऊपर वाले चाचाजी के दूध में से आधा दूध निकाल लेती है और उतना ही पानी मिला देती है, और हमसे कहती है कि उन्हें बताना मत। मैंने तो आज पहली बार ही चोरी की है।''

माँ का मुख तो लज्जा से झुक गया था किंतु महिला के मुंह की आभा देखते ही बनती थी उस समय वास्तव में बच्चों के निर्माण में घर का वातावरण बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

बाधक सम्पति

फ्रांसिस ने एक कोढ़ी को चिकित्सा हेतु धन दिया, वस्त्र दिए एवं स्वयं उसकी सेवा की। एक गिरजाघर की मरम्मत हेतु पिता की दुकान से कपड़े की गांठें और अपना घोड़ा बेचकर धन की व्यवस्था कर दी। पिता को पता चला तो उन्होंने पीटा एवं अपनी संपदा के अधिकार से वंचित करने की धमकी दी। पिता की धमकी सुनकर वे बोले–''आपने मुझे बहुत बड़े बंधन से मुक्त कर दिया। जो संपति लोकहित में न लग सके, उसे दूर से प्रणाम है। कहकर उन्होंने पिता के दिए कपड़े भी उतार दिये और एक चोगा पहनकर निकल गए। आगे यही संत फ्रांसिस कहलाए। लोकसेवा के मार्ग में बाधा बनने वाली संपदा को त्याग ही देना चाहिये।

जैन धर्म बदला लेने वाला नहीं बदलाव लानेवाला धर्म है।

धर्मवीर हेमचंद्रभाई का स्टेटमेंट

दीक्षित होने के बाद हेमचंद्रभाई की पत्नी के परिवार ने घोर आपत्ति की थी और कोर्ट में केस दायर कर दिया, इस पर बहुत बवाल मचा। हेमचंद्रभाई दीक्षा छोड़ने को तैयार नहीं थे। कोर्ट में हेमचंद्रभाई ने एक स्टेटमेंट दिया था जो नीचे लिखे अनुसार था।

''आज मेरे सामने जिस सम्बन्ध के बारे में केस करने में आया है उस सम्बन्ध में, मैं जिन साधु नीचे लिखे अनुसार मेरी कैफीयत बताना चाहता हूं।''

आज मेरे ऊपर इस सम्बन्ध में दावा करने में आया है इसके द्वारा मुझे संसार में पीछे लाने की कौशिश की जा रही है। इस प्रकार मुझे वापस लाने का यह प्रयास गलत है।

मेरी शादी के समय में मैंने बार-बार यह चेतावनी दी थी कि मेरी संसार में रहने की इच्छा नहीं है। यही नहीं मैं दीक्षा धारण कर जैन साधु होना चाहता हूं, यह मेरी चेतावनी के बाद भी मेरा बलात्कारपूर्वक शादी की गई है।

मेरे दीक्षा ग्रहण करने के बाद जो-जो परिणाम आये उसके लिये मैं ही जवाबदार नहीं है बल्कि बलात्कारपूर्वक विवाह कराने वाले भी जवाबदार है।

इस कारण से मैं साधुवेश छोड़ना नहीं चाहता हूं, इसी वेश में रहने की मांग करता हूं और ग्रहण की गई दीक्षा को स्थिर रखना ही मेरा उद्देश्य है।

आगम आरस अद्भुत हैं,
इसमें आत्मा स्पष्ट दिखती है।
जिसने इस विरासत को बतलाया,
उन सागरसूरी के चरणों में शीश झुकाये।।

धन्य अहोभाग्य हमारे कि इस विषम पंचम आरा में सर्वज्ञ प्रभु की अमृत वाणी की विरासत के रूप में आगम ग्रंथ हमें ज्ञानी गुरु भगवंतों के श्रीमुख से सुनने को मिलते हैं। इससे ही हमारे विवेक का दीपक सतेज बना रहेगा।

आगमोद्धारकश्री और आगम ग्रंथ

* डॉ.सुभाष जैन -आगमोध्दारक

अनंत *उपकारी तीर्थंकर परमात्मा के शासन में संयम क्रिया के पालन के साथ ज्ञान गरिमा को पचा जाने वाले महापुरूष अनेक आराधक पुण्यात्माओं के पथप्रदर्शक बन जाते है, कालचक्र के प्रभाव से, उसके परिवर्तनकारी असर से आराधना के लिये द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव पर विविध प्रकार से उतार-चढ़ाव होता रहता है, ऐसे काल में श्री वीतराग परमात्मा के द्वारा निर्देशित सर्वहितकर श्रुतधर्म और चारित्र धर्म के द्वारा बाह्य निमित्त की अनुकूलता और योग्य सहयोग न होने केबाद भी पूर्व जन्म की आराधना के बल पर अपनी स्वतः पुरूषार्थ और वीर्योल्लास से जगत को राग, द्वेष दूर करने और कर्म के बंधनों से मुक्ति दिलानेवाले महापुरूष हकीकत में अत्यन्त आदर के पात्र और प्रातः स्मरणीय बनते हैं।*

ऐसे ही अद्वितीय अनन्य असाधारण प्रतिमा से सम्पन्न आगम प्राण महापुरूष, शासन के प्रति वफादार ***पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री सागरानंद सूरीश्वरजी महाराजा*** *बहुमुखी प्रतिमा के स्वामी थे। आपश्री ने शासन के विविध अंगों को परिपुष्ट करने में अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। देव और गुरूकृपा से 20 वीं शताब्दी में महान ज्योर्तिधर, देवसूर तपागच्छ समाचारी सरंक्षक बहुश्रुत शिरोमणि पूज्यपादश्री ने अपने जीवन में जो भी कार्य शासन हित में किये है, उनकी दूसरी मिसाल आज भी नहीं मिलती है लेकिन जो सबसे महत्वपूर्ण कार्य आपश्री के वरदहस्त हुआ वह है आगम ग्रंथों को संपूर्ण भारत में से खोज निकालना और उन्हें सुरक्षित रख जैनत्व को जीवन दान देना है। आगम ग्रंथों में छिपे रहस्यों को कम्प्यूटर की भांति अपने मस्तिष्क में डाटा की तरह एकत्र कर योग समय पर सारे जैन जगत को जानकारी देना और शंका-कुशंकाओं का समाधान करने में आपश्री को महारत हासिल था यही कारण था कि आगमों के ज्ञान को श्रमण संघ में प्रचार-प्रसार और अनेक प्रकार के सरंक्षण और भावि को सामने रखते हुए मूल स्वरूप में अखंड आगम साहित्य को जीवित रखा। इस प्रयोजन में अपना संपूर्ण जीवन खपानेवाले आगमोद्धारकश्री ने शिलालेख तथा ताम्रपत्र के ऊपर आगमग्रंथों को उकेर कर वीतराग वाणी के प्रतिनिधि, आगम ग्रंथों को अमूल्य जीवन दान दिया है।वर्तमान युग के तीर्थाधिपति प्रभु श्री वर्धमान स्वामीजी के शासन में आगम साहित्य की विरासत को सरंक्षित करनेवाले शासन प्रभावक पूर्व के महापुरूषों के द्वारा जो आगम वाचनाएं दी गई थी उस धरोहर को जैन जगत के सामने लाने के साथ ही आगमोद्धारकश्री ने आगम ग्रंथों पर वाचना देने की प्रवृत्ति को भी पुर्नजीवित किया है,यही नहीं श्री वीरप्रभु के निर्वाण के बाद में 980 वर्ष श्री देवर्ध्दिगणी क्षमाक्षमण के द्वारा की गई छट्‌टी आगम वाचना के बाद 1500 सौ वर्ष के लम्बे समय बाद विषम दुःषमक में भव्य प्राणियों को कुमति की कटिलता के पाश से मुक्त करने का अतुलनीय कार्य आपश्री ने आगम ग्रंथों को सुरक्षित कर किया है। इसके लिये आपश्री ने ज्ञान वृद्धि के लिये आगम ग्रंथों को छपवाने, ताम्र और पाषाण शिला पर उकेरने के साथ मुख से वाचना देने का भी अद्‌भूत शौर्य दिखलाया है।*

पूज्य आगमोद्धारकश्री के द्वारा खोजे गये आगमग्रंथ और उन पर किये गये शोधपरक कार्य का जीवंत उदाहरण श्री सिद्धक्षेत्र पालीताना में श्री सिद्धगिरी की तलेटी में भव्य देव विमान तुल्य श्री वर्धमान आगम मंदिर का भव्यतम निर्माण और वहां पर वर्तमान में उपलब्ध 45 आगम ग्रंथ जिनमें जरा भी अशुद्धि नहीं है को सुन्दर मकराना के शिलालेखों तथा घातु की प्लेट पर उकेरा गया है। इस कार्य से आपश्री ने देवर्द्धिगणी क्षमाक्षमण के द्वारा किये गये आगम पाठ को चिरंजीव बना दिया है। इसी के साथ श्री वर्धमान जैन ताम्र पत्र आगम मंदिर-सूरत को मात्र 9 माह में तैयार करवाकर जिन शासन भक्त संतानों के लिये आगम की अद्‌भूत विरासत सौंप कर मोक्ष मार्ग की ओर प्रस्थान किया।

प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री के कई लोगों ने गुणगान किया। पूज्यश्री पर पुस्तकें लिखी, गीत लिखे, कई मूर्धन्य विद्ववानों ने पूज्यश्री पर कलम चलाई फिर भी आगमोद्धारकश्री के सम्पूर्ण व्यक्तित्व और कृतित्व को बाहर नहीं ला सके, ऐसे अजोड -बेजोड़ आगमोद्धारकश्री के गुणगान करने का,आपश्री की कीर्ति गाथाओं की प्रशंसा करने का मुझे क्या अधिकार है? फिर भी मुझे कहना है कि- सिद्ध वस्तु का विवेचन करने की जरूरत नहीं है, सिद्ध को कैसे सिद्ध किया जा सकता है? जैन जगत में पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री सिद्ध संत, प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित अजोड़ आचार्य है और रहेंगे, आपश्री ने जीवन में अनहोने कार्यकर अपने यशस्वी जीवन के ऊपर स्वर्ण क्लश का रोपण किया है। जिन शासन के प्रत्येक शक्ति सम्पन्न भावुक आत्मा आगमों की भावी हितकर व्यवस्था को सरंक्षित करने के प्रयत्न करें इसके साथ ही आज के युग में दिखावटी प्रचार-प्रसार के चक्कर में पड़कर अयोग्य हाथ में यह आगम साहित्य न आवे ऐसी पूर्ण चौकीदारी रखकर योग्य प्रयास भी करें।

इसी से हम आगमोद्धारकश्री के सद्प्रयासों को आदरांजलि दे सकेंगे सागर समुदाय के लिये सदाकाल विजयवंत रहने में ही हमारा गौरव समझना चाहिये। धन्यवाद।

श्रीसागरजी और संस्था

जैन शासन में धर्म आराधना के लिये मुख्य रूप से सम्यगदर्शन गुण का विशिष्ट निर्मल बनाने के लिये श्रुत महापुरुषों ने अव्युच्छिति (तीर्थंकर परमात्मा के द्वारा दिखाये गये मार्ग पर निरंतर बगैर रुके लगातार बालक लोगों के मस्तिष्क में भी प्रवाहित करते रहना) गुण को अपने जीवन का ध्येय बनाकर हम पर अवर्णनीय उपकार किया है। इस कार्य को भूतकाल में आचार्यश्री भद्रबाहुस्वामी, आचार्यश्री स्थुलीभद्रजी, आचार्यश्री सिद्धसेन दिवाकरजी, आचार्यश्री उमास्वतिश्रीजी, आचार्यश्री आर्यरक्षित सूरिजी, आचार्यश्री जिनदासगणिजी, आचार्यश्री जिनभद्रगणिजी आदि अनेक महापुरुष हो गये हैं।

इन्हीं महापुरुषों के साथ आचार्यश्री हरिभद्र सूरीश्वरजी पूज्य आचार्यश्री कालिकाल सर्वज्ञश्री हेमचंद्र सूरीश्वरजी, श्रीमलयगिरिजी, आचार्यश्री अभयदेव सूरीश्वरजी महोपाध्याय न्यायविशारद श्री यशोविजयजी आदि समर्थ शास्त्र पारंगत श्रुत धर गहन अर्थ गंभीर सर्वतोमुखी प्रतिमा के दर्शन कराने वाले सैक़डों हजारों ग्रंथों से रचयिता से ही जिन शासन जयवंता बना है।

यही कार्य बीसवीं शताब्दी में **आगमवेत्ता पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज** ने अपने जीवनकाल में कर आगम ग्रंथों को अमरता प्रदान कर खुद भी अमरता पाई है। आगम ग्रंथों के मुद्रण, प्रकाशन रक्षा, शिला ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण करने के लक्ष्य के साथ चिरंजीव बनाने के लिये आर्थिक व्यवस्था के लिये अपने जीवन काल में अनेक संस्थाओं की स्थापना कारवाई थी इन सभी संख्याओं ने अपने कार्यों को पूर्ण करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। पूज्यश्री के द्वारा स्थापित की गई संस्था की सूची निम्नानुसार है-

क्र.	स्थापना विक्रम संवत	संस्था का नाम
1	1964	सेठ देवचंद्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धारक फण्ड, सूरत
2	1970	श्री आगमोद्धारक समिति
3	1975	श्री जैनानंद पुस्तकालय, सूरत
4	1977	सेठ ऋषभदेव केशरीमलजी पेढ़ी, रतलाम
5	1980	उपाश्रय और ज्ञानमंदिर, कलकत्ता
6	1980	श्री हिन्दी साहित्य प्रचारक फण्ड, अजीमगंज
7	1983	जैन बोर्डिंग, रतलाम
8	1984	श्री जैनामृत समिति, उदयपुर
9	1984	श्री नवपद आराधक समाज
10	1985	श्री वर्धमान तप आयंबिल खाता, जामनगर
11	1985	श्री श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन बोर्डिंग, जामनगर
12	1987	श्री जैन तत्वबोध पाठशाला, सूरत
13	1987	श्री रत्नसागरजी जैन विद्याशाला कापमी फंड, सूरत
14	1987	श्री नगीनभाई मंघुभाई जैन साहित्योद्धारक फंड, सूरत
15	1988	श्री सिद्धचक्र साहित्य प्रचारक समिति
16	1992	श्री लक्ष्मी आश्रम तथा जैन भोजनशाला, जामनगर
17	1993	श्री देवबाग, जामनगर
18	1993	श्री आयंबिल खाता ओर जैन भोजनशाला, जामनगर
19	1994	श्री वर्धमान जैन आगम मंदिर, पालीताना
20	1995	श्री श्रमण संघ पुस्तक फंड
21	1998	श्री जैन धर्म प्रभावक समाज, अहमदाबाद
22	1998	श्री सिद्धचक्र गणधर मंदिर, पालीताना
23	2000	श्री शांतिनाथजी पेढ़ी, गोधरा
24	2002	श्री आगमोद्धारक संस्था, सूरत
25	2003	श्री गोवर्धन जैन ताम्रपत्रागम मंदिर, सूरत

आओ ! प्रत्याख्यान करें....

✻ डॉ. दिलीप धींग

उजड़-उजड़ जीवन जंगल,
सुरभित नव उद्यान करें।
व्रत-नियमों के फूल उगाएँ,
आओ ! प्रत्याख्यान करें।

प्रचुर पुण्य से जीवन पाया ।
कुछ करने का अवसर आया ।
स्वर्णिम पल ये चले न जाएँ,
उठो ! समय का ध्यान करें।
आओ ! प्रत्याख्यान करें।

समता, क्षमता, इच्छाशक्ति।
त्याग-तपस्या से अनुरक्ति।
और विरक्ति छल-प्रपंच से,
जीवन ऐसा निर्माण करें।
आओ ! प्रत्याख्यान करें।

खाना-पीना कब क्या कैसे ?
जी रहे बस जैसे-तैसे !
संकल्प का शंख बजाकर,
मर्यादा का मान करें।
आओ ! प्रत्याख्यान करें।

असंयम के कष्ट अकथ है।
भोगों से जीवन लथपथ है।
दलदली बीहड़ राहों को,
सुगम सरल आसान करें।
आओ ! प्रत्याख्यान करें।

संयम जीवन का सच्चा धन।
स्वस्थ समर्थ रहते तन-मन।
संयममय जीवन ही जीवन,
फिर से यह ऐलान करें।
आओ ! प्रत्याख्यान करें।

जो जीवन व्रत-नियमहित है।
दिशाहीन वह लक्ष्यहीन है।
व्रत से हुए प्रशस्त पथ पर,
लें पाथेय प्रयाण करें।
आओ ! प्रत्याख्यान करें।

बढ़ती पुण्य सम्पदा भारी।
संवर की दृढ़ चार दीवारी।
कर्म-निर्जरा की शक्ति से,
आत्म-तत्व पहिचान करें।
आओ ! प्रत्याख्यान करें।

मन के हारे मन के अनुचर।
भय-संकट है कदम-कदम पर।
अहा ! हम स्वतन्त्र बन्दी !
मुक्ति का आव्हान करें।
आओ ! प्रत्याख्यान करें।

परमेष्ठिस्वरुप ॐकार संकिर्तन

श्री गौतम स्वामी ने भगवान से पूछा है कि कैवल्य सिद्धि के लिये सर्व प्रथम कौन सा कर्म करना चाहिये।

श्री भगवान ने उत्तर दिया कि तुम गुरु सेवा प्रथम कर्त्तव्य है क्योंकि उनके वचनों में आत्म जागरण की शक्ति होती है । शास्त्रादि व्यवहार के लिये जिस प्रकार सर्व प्रथम नाम की आवश्यकता रहती है वैसे ही आत्मार्थी को देव गुरु एवं धर्म के नाम का श्रवण करना चाहिये। पूर्व ज्ञानियों ने भी धर्माचरण में सर्व प्रथम नाम का ही निक्षेप किया है क्योंकि नाम अथवा स्थापना द्वारा व्यक्ति हृदय में तादात्म्य का चिंतन करता है एवं तद्रूप को प्राप्त कर लेता है। नाम संकीर्तन में संक्षेप में 'ॐकार' का ध्यान करना चाहिये क्योंकि इसके 'अ' में आचार्य, 'उ' में उपाध्याय तथा 'म' में मुनि रुप पंच परमेष्ठि का स्वरुप कहा गया है। इस प्रकार नाना विवेचनों में 'ॐ' में पंच परमेष्ठि का स्वरुप प्रतिष्ठित किया गया है। 'ॐ' में अधोलोक, उर्ध्वलोक तथा मर्त्यलोक समाये हुए है। इसी 'ॐ' के 'अ' में विष्णु, 'उ' में ब्रह्मा व 'म' में शिव समाये हुए है, अतः ब्रह्म की प्राप्ति हेतु 'ॐकार' का ध्यान करना चाहिये । बिन्दु समेत 'ॐकार' में मुक्तावस्था-रुप सिद्धावस्था निहित है और यह साक्षात् परमेश्वर है।

✻ हमारी संस्कृति में गाय को माता कहा जाता है व माता सर्वोपरी होती है, पूजनीय होती है व माता का नाश ही हमारा विनाश है।

लोकान्त तक ऊर्ध्वगमन कर्म मुक्ति के पश्चात

नारक का अधोलोक, मनुष्यों का तिर्यक् लोक और वैमानिक देवों का ऊर्ध्वलोक में विशिष्ट स्थान है। वैसे ही सिद्ध विशुद्ध चैतन्य है। विशिष्ट प्रकार के चरम स्तर तक विकसित जीव है। इसलिये ऊर्ध्वलोक में लोकाग्र भाग में उनके भी स्थित होने का एक विशिष्ट स्थान है और वह सिद्धालय है। वहां पहुंचकर सिद्ध-भगवान स्थित हो जाते हैं।

लोकन्त शब्द को स्वोपज्ञ टीका तत्वार्थ दीपिका में इस तरह व्यक्त किया है- ''पंचास्तिकाय के समुदाय रुप लोक है। वहां-ऊपर के लोकान्त स्थान में हिम के टुकड़े के समान उत्तान छत्र की आकृतिवाली इषत्प्राग्भारा नाम की पृथ्वी है। इस पृथ्वी के ऊपर चार कोशात्मक एक योजन ऊपर आलोक है अर्थात् उस पृथ्वी के ऊपर चार कोश तक लोक है। उनमें तीन कोश नीचे को छोड़कर चौथे कोश के छठे भाग- तीन सौ तैंतीस धनुष्य और बत्तीस अंगुल जितना क्षेत्र ग्रहण करना। इतना क्षेत्र लोकान्त शब्द से समझना चाहिये। मुक्तात्मा वहां सिद्ध होकर स्थित होता है।

''तओ पच्छा उड़्द गच्छइ जाव लोगंतं।'' तत्वार्थ सूत्र कर्म से मुक्त होने के पश्चात् लोकान्त तक ऊर्ध्वगमन होता है।

''ण तओ परं धम्मथिकायाभावा'' इसके आगे मुक्तात्मा की गति नहीं, धर्मास्तिकाय का अभाव होने से। लोकाग्र तक मुक्तात्मा की गति होने के छह कारण है।

निस्संगओ निरंगणओ गइपरिणामाओ बन्ध-छेटाओ णिरिंघणाओ पुव्व-प्पओगा य तग्गई।

तत्वार्थ सूत्र-

1- निःसंगता- जीव कर्म से मुक्त होने से ऊर्ध्वगति करता है। संगयाने कर्म।

2- निरंगणता- मोह से रहित आत्मा अश्वमेव कर्म से मुक्त होता है। मोह के अभाव में निरंगणता प्राप्त होती है।

3- गतिपरिणाम- मुक्तात्मा में स्वतः गति-रुप परिणमन होने से ऊर्ध्वगमन होता है।

4- बंध छेदन- मुक्तात्मा तेजस-कार्मण शरीर के बन्धन से छूटने से ऊर्ध्वगति करता है।

5- निरिंधनता- मुक्तात्मा निरंधनता (कर्म का अभाव) से असंसारिता (संसार का अभाव) होने से ऊर्ध्व गमन करता है।

6- पूर्व प्रयोग- औदारिक शरीर के छोड़े जाने के बाद उसके निमित्त से मुक्तात्मा ऊपर की ओर गति करता है।

✻ शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर

असली संपत्ति सादगी ही है

✻ महाराष्ट्र के पेशवा माधवराव के गुरु, मंत्री एवं न्यायाधीश जैसे उच्च पदों से सम्पन्न से सम्पन्न होकर भी शास्त्रीजी का जीवन सादगी का मूर्त रुप था। एक दिन शास्त्रीजी की धर्मपत्नी आवश्यक कार्यवश राजमहल में रानी के पास गई। रानी ने गुरुपत्नी को जनसाधारण से भी सादा वस्त्रों में देखा, तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। गुरुपत्नी की यह स्थिति उसे अपने और स्वयं महाराज माधवराव के सम्मान में एक कमी महसूस हुई। उसने सोचा, गुरुपत्नी की इस दशा से महाराज की निंदा होना स्वाभाविक है। रानी ने गुरुपत्नी को सुंदर-सुंदर बहुमूल्य वस्त्र, आभूषण पहनाए और सम्मान के साथ कहारों द्वारा पालकी में बैठाकर घर भिजवाया।

कहारों ने द्वार पर जाकर किवाड़ खटखटाए। शास्त्रीजी आए, किवाड़ खोले, किन्तु यह कहकर बंद कर दिए, भाई यह बहुमूल्य वस्त्राभूषणों से अलंकृतदेवी कोई और है, आप लोग भूल से यहां आ गए। इन्हें तो किसी भव्य महल या राजप्रासादों में ले जाओ। शास्त्रीजी की धर्मपत्नी उनके स्वभाव को भली प्रकार जानती थी। वह राजमहल में लौट गई और वहां उन वस्त्राभूषणों को छोड़कर अपने पूर्व वस्त्र धारण किए और पैदल ही राजमहल से अपने घर तक आई। घर पर आई, तो दरवाजा खटखटाना नहीं पड़ा, दरवाजा खुला था। स्वागत करते हुए रामशास्त्री बोले- ''भद्रे, ब्राह्मण तो अन्यों को मर्यादा-पालन सिखाता है। उसकी असली संपत्ति सादगी ही है।

हम प्रगतिशील बनें...!

प्रगतिशीलता का अर्थ है- एक नवचेतना, एक जागरुक विवेक जिसके आधार पर कोई अपना हित-अहित ठीक तरह से देख-समझ सके। जो राष्ट्र गुण-दोष, हानि-लाभ के दृष्टिकोण से किसी बात का निर्णय करके अपने लिए मार्ग निर्धारित करते हैं, वे राष्ट्र प्रगतिशील ही कहे जाएंगे। जो अपनी अहितकर कुरीतियों, प्रथाओं एवं परम्पराओं को छोड़ने के लिए और उनके स्थान पर नई, उपयोगी एवं समयानुसार प्रथा-परम्पाराएं प्रचलित करने के लिए खुशी-खुशी तैयार रहते हैं, वे समाज ही जाग्रत चेतना के पुंज कहे जाएंगे।

इसके विपरीत जो समाज अथवा राष्ट्र अपने पुराने संस्कारों और पिछड़ेपन को कसकर पकड़े हुए किसी गलत रास्ते पर इसलिये चलते जाते हैं कि उस पर वे बहुत समय से चले आ रहे हैं, प्रगतिशील समाज नहीं कहे जाते। अहितकर प्रथा परम्पराओं को गले लगाए रहना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि अमुक समाज पिछड़ा हुआ समाज है।

बहुत कुछ प्राचीन होने पर भी प्रगतिशीलता की दृष्टि से हमारे भारतीय राष्ट्र की गणना अभी नवोदित राष्ट्रों में ही है। उसने अभी केवल राजनैतिक स्वतंत्राता ही उपलब्ध की है। उन्नति एवं विकास के नाम पर अभी उसे कुछ खास उपलब्धियाँ नहीं प्राप्त हो सकी हैं। यह बात ठीक है कि देश की उन्नति के प्रयत्न चल रहे हैं, किन्तु उन सब प्रयत्नों की पृष्ठभूमि केवल आर्थिक ही है। मात्र आर्थिक उन्नति से ही कोई राष्ट्र समुन्नत राष्ट्र नहीं बन सकता। किसी राष्ट्र की वास्तविक उन्नति तो उसकी सामाजिक उन्नति में ही निहित रहती हैं।

इस कटु सत्य को स्वीकार करने पर किसे आपत्ति हो सकती है कि हमारा समाज प्रगतिशीलता के नाम पर बिलकुल निकम्मा बना हुआ है। इसका अस्तित्व अभी भी जातीय द्वेष साम्प्रदायिक बैर के पंक में डूबा है। अब तक उसमें स्वतंत्र चिंतन और नवचेतना नहीं आ सकी है किन्तु यदि अपने भारतीय राष्ट्र को शक्तिशाली बनना है, अपनी स्वतंत्राता को सुरक्षित रखना है, तो उसे अपनी उन आंतरिक दुर्बलताओं को दूर करना ही होगा, जो उसकी वास्तविक प्रगति के पथ में अवरोध बनी हुई है।

✻ परम पूज्य गुरुदेव

सारा संसार जानता है कि भारतीय समाज के पास न तो बुद्धि की कमी है, न विद्या की और न वीरता की व बलिदान की। यदि उसमें कोई कमी है तो केवल उस प्रगतिशीलता की, जिसकी आज के युग में बहुत आवश्यकता है। आज जब अपने समाज, अपने राष्ट्र को अग्रगामी बनाने के लिए संसार के सारे लोग प्रगतिशील हो रहे हैं, तब क्या कारण है हम भारतीय ही अपने पिछड़ेपन से पीछा छुड़ाकर प्रगतिशीलता के पथ पर आगे न बढ़ें?

✻ लखनऊ स्टेशन पर तब एक अंग्रेज स्टेशन मास्टर था। उसके कमरे के आगे जलती अंगीठी पर एक वृद्धा अत्यधिक ठण्ड के कारण हाथ सेंकने जा पहुंची।

स्टेशन मास्टर इसमें अपनी तौहीनी समझकर आपे से बाहर हो गए और इतने जोर से उसे धमकाने लगे कि यात्रियों की भीड़ जमा हो गई।

भीड़ में से एक व्यक्ति निकला, बोला- ''आप तो ईसाई हैं न ? बाईबिल पढ़ते या सुनते हैं न ? फिर उनके संकेतों को ध्यानपूर्वक क्यों नहीं समझ पाते ? यदि आप जैसे समाज के वरिष्ठ लोग भी ऐसा आचरण करेंगे, तो पारस्परिक व्यवहार के सारे मापदण्ड नष्ट हो जाएंगे।'' भीड़ के उस व्यक्ति ने अपनी ऊनी चादर बुढ़िया को उढ़ा दी और भीड़ के साथ आगे बढ़ गया। यह यात्री था- पादरी सी.एफ. एन्डूज, जो जीवन भर पीड़ित मानवता की सेवा में संलग्न रहे।

✻ यदि तुम शांति, सामर्थ्य और शक्ति चाहते हो, तो अपनी अंतरात्मा का सहारा पकड़े। तुम सारे संसार को धोखा दे सकते हो किन्तु अपनी आत्मा को कौन धोखा दे सका है ? यदि प्रत्येक कार्य में आप अंतरात्मा की सम्मति प्राप्त कर लिया करेंगे, तो विवेक पथ नष्ट होगा। दुनिया भर का विरोध करने पर भी यदि आप अपनी अंतरात्मा का पालन कर सके, तो कोई आपको सफलता प्राप्त करने से नहीं रोक सकता।

पुण्य से मिलता हैं.... क्या ? क्या ?

संपुन्नइंदियत्तं माणुसत्तं आयरियखित्तं।
जाइकुलजिणधम्मो लब्भंति पभूयपुण्णेहिं॥

अर्थात्- परिपूर्ण इंद्रियों की प्राप्ति, मनुष्य भव, आर्यक्षेत्र, उत्तम जाति-कुलमें जन्म और जिनधर्म यह सब प्रचुर पुण्य से मिलता है।

लघु शांति स्तोत्र की कथा और उसका प्रभाव

राजस्थान के नाडोल गांव में पिता सेठ धनेश्वर और माता धारिणी के आंगन में जन्म लिए हुए पुत्र मानदेव को आचार्यश्री प्रद्योतनसूरीजी का उपदेश सुनकर उनके अंतर में वैराग्य जागृत हो उठा, दीक्षित हो कर कुछ ही समय में शास्त्राभ्यास द्वारा 11 अंग और छेदं सूत्र में निष्णात बने मुनि श्री मानदेव को आचार्य पद से विभूषित किया गया।

कुछ समय पश्चात एक घटना देखने को मिली उस समय में मानदेवसूरि के एक कंधे पर साक्षात लक्ष्मी और दूसरे कंधे पर साक्षात सरस्वती विराजमान थी।

यह दृश्य देख उनके गुरु श्री प्रद्योतनसूरीजी दुविधा से घिर गये। (आज के आचार्य होते तो इसका प्रचार करवाते) कारण कि जैनाचार्य की महान पदवी पाने के पश्चात श्री मानदेवसूरि शुद्ध चारित्र पाल पायेंगे या नहीं ? चारित्र में किसी भी प्रकार की क्षति तो नहीं आयेगी ?

आज्ञाकारी शिष्य श्री मानदेवसूरि गुरु की मन वेदना को समझ गये, उन्होंने उसी समय प्रतिज्ञा की आज से मैं स्वयं कभी भी किसी भक्त वर्ग के वहां से गोचरी नहीं वहोरुंगा और आजीवन इस प्रतिज्ञा का पालन करुंगा।

इस कारण से पू.श्री मानदेवसूरी का तप और ज्यादा उज्जवल बना। उनका नैष्ठिक ब्रह्मचर्य और उत्कृष्ट ज्ञान देखकर जया, विजया, अजिता और अपराजित नाम की चार देवियां उनके सान्निध्य में रहने लगी और सदैव उनको वंदन करने हेतु आने लगी। परिणाम स्वरुप पू.मानवदेव सूरीजी के यश सर्वत्र फैलने लगा।

उस समय में जैनों की समृद्धि के उच्च शिखर पर शोभित तक्षशिला नगरी में 500 जिनमंदिर थे। ईर्ष्यावश इस नगरी में अचानक दुष्ट शाकरंभी देवी द्वारा महामारी मरकी रोग का आंतक फैला और अनेक लोगों की अकाल मृत्यु होने लगी। संपूर्ण नगर मृत देह के ढेरों से भर गया और हृदय को चीर दे इस प्रकार की वेदना और रुदन के सिवाय नगर में कुछ भी सुनने को नहीं मिलता था। उस समय चिंताओं से घिरे श्री संघ के श्रावक इस विकट परिस्थितियों का उपाय खोजने में लगे। उन्होंने शासन देवी की आराधना की तभी देवी ने आकाशवाणी से कहा कि नाडोल नगर में महाप्रभावक आचार्य मानदेवसूरीजी के पास जाएं और उनके चरणों के पक्षालन के जल का संपूर्ण नगरी में छिड़काव करने से यह उपद्रव शांत होगा।

तक्षशिला नगरी के सुश्रावक श्री वीरचंदभाई श्रीसंघ का विनंतीपत्र लेकर आचार्य मानदेवसूरीजी के पास आये, तभी देवीओं को देख उनके मनोमन एक शंका उठी कि ये स्त्रीयां यहां पू.आचार्य महाराज के पास किसलिए बैठी होंगी ? परिणाम स्वरुप आचार्यश्री के वंदन किए बिना ही वीरचंद बैठे। इस प्रकार का अविनय भरा बरताव देख देवियों ने उन्हें बांध दिया। पश्चाताप का अनुभव करते हुए वीरचंद्र ने गुरुदेव से क्षमा मांगी। तुरन्त ही क्षमा देकर बंधनमुक्त किया। तब आचार्यश्री ने कहा- ''मंत्राधिराज लघु शांति'' सूत्र बनाकर दिया।

॥ लघु-शांति स्तवन सूत्र ॥

यह आपको पुस्तकों में मिल जायेगा

और यह भी कहा कि- इस स्तोत्र का पाठ कर मंत्रित जळ का छिड़काव करने से मरकी के उपद्रव से शांति होगी। श्रावक वीरचंद स्तोत्र लेकर तक्षशिला नगरी में पहुंचे। श्री संघ ने आचार्य मानदेवसूरीजी के कहे अनुसार सूत्र का पाठ कर मंत्रित जल का छिड़काव संपूर्ण नगर में किया, परिणाम स्वरुप देवी का उपद्रव शांत हुआ।

स्तोत्र की प्रथम गाथा में ''श'' का आठ बार उपयोग हुआ है कारण कि ''श'' अक्षर शांतिदायक और सुखद स्थिति का निदर्शक होने से मंगल रुप है। दूसरी गाथा में ''नाममंत्र स्तुति'' का प्रारंभ होता है। उसकी चार गाथाओं में श्री शांतिनाथ भगवान की सोलह नामों के साथ स्तुति करने में आयी है। छठ्ठी गाथा में विजया और जया देवी की स्तुति करने का प्रयोजन बताया है।

सातवीं गाथा से पंद्रहवी गाथा तक मतलब कुल नौ गाथा ''नव रत्न माला'' है। देवी की विविध नामों के साथ स्तुति की है। सकल संघ और चतुर्विघ संघ को याद किया है। जया विजया देवी उपद्रवों से रक्षण करें। चौदहवीं गाथा में मंत्र है। पंद्रहवीं गाथा में जया विजया देवी की स्तुति करने में आयी है। श्री शांतिनाथ भगवान को नमस्कार करने वाले सभी को संपूर्ण उपद्रवों से शांति मिलती है।

सोलहवीं सत्रहवीं गाथा में सूत्र की फल श्रुति बतायी गयी है। यह सूत्र पूर्व सूरि भगवंतों द्वारा प्रकाशित किये हुए मंत्र पदों से गूंथा हुआ है। जो मनुष्य इस स्तोत्र का निरंतर

भाव पूर्वक पाठ करता है, भाव पूर्वक दूसरे के पास से श्रवण करता है उन्हें शांति प्राप्ति होती हैं।

लघु शांति स्तोत्र की रचना श्री मानदेवसूरीश्वरजी महाराज साहब ने वीर निर्वाण की सातवीं शताब्दी में राजस्थान के नाडोल गाँव में की थी। संध्याकाल के प्रतिक्रमण में लघु शांति बोली जाती हैं।

जैन मंदिरों पर आस्था न होने के कारण साधुमार्गीयों ने इस अजोड़ सूत्र को हटाकर अपने श्रावकों को इससे वंचित किया है, क्योंकि ये कथा बार-बार सुनने में आने से भक्तों के मन के भाव जैन मंदिरों पर श्रद्धा उत्पन्न होने का खातरा था, इसलिए ये रिस्क क्यों लेते ! उतरते काल में भले ऐसे आचार्य आज न हों, पर साधुओं की परम्परा चलते रहने के कारण ही हमें ये सूत्र उनके द्वारा मिला है। हम अपनी मान्यताओं को किनारे रखकर जैन धर्म के सभी सम्प्रदायों का एक सा मान करें तो सारे श्रावक अद्भूत जिन सूत्रों से लाभ तो पायेंगे ही, पूरा जैन संघ महावीर स्वामी की छत्र छाया में एक होगा।

गुरूदेव की सीख

जब हेमचन्द्र दीक्षा लेने के लिये मुनिश्री झवेरसागरजी महाराज के पास गये तो महाराज श्री झवेरसागरजी ने बहुत ही अच्छी तरह से हेमचन्द्र की चारित्र ग्रहण करने, दीक्षा लेने की अनेक तरीकों से बहुत अच्छी तरह से जानकारी प्राप्त कर ली। हेमचंद्र से भी अच्छी तरह से बातचीत कर उनकी दीक्षा लेने की भावना को समझ लिया। पूज्य मुनिश्री झवेरसागरजी महाराज ने हेमचन्द्र को यह बहुत अच्छी तरह से समझा दिया कि दीक्षा क्या है? दीक्षा को पालन कितना कठिन और जवाबदारी भरा काम है। यह बात भी कह दी कि- आपसे दीक्षा का पालन नहीं होता है तो इसके कारण सिर्फ आपकी निंदा नहीं होती है बल्कि समग्र जैन शासन की निंदा होती है। यह सब विस्तार से चर्चा होने के बाद धर्मवीर हेमचंद्र ने पूज्य मुनिश्री झवेरसागरजी महाराज से कहा- गुरूदेव। दीक्षा क्या है? और इसकी जवाबदारी कितनी गंभीर और महान है। यह मैं अच्छी तरह से जानता हूं। मैंने अपने अंतर में अनेक वर्षों से दीक्षा लेने की भावना को पुष्ट किया है अब आपश्री मेरी इस भावना को पूर्ण करें। यह मेरी आशा है। दीक्षा लेकर में त्याग धर्म को शोभायमान करने का पूरा-पूरा प्रयत्न करूंगा और मेरी संयम सरिता में लेश मात्र भी गंदगी नहीं होगी।

करोड़ों की कीमत का हीरा

अहमदाबाद में चार्तुमास सम्पन्न कर पूज्य पंन्यास प्रवर श्री आनंदसागरजी महाराज अपनी जन्म भूमि कपड़वंज पधारे यहां संत अपार उत्साह और उमंग के द्वारा भव्य अगवानी हुई लोगों के अतिउत्साह को देखकर पूज्यश्री ने कहाकि- आप मुझ पर इतनी प्रीति मत रखो, मेरी काया पर इतना राग मत करो, मैं वीर भगवान के सिद्धांतों का प्रचार कर रहा हूं, आपको वीर प्रभु के सिद्धांतों पर ही राग रखना है और जिससे बन सके उसे इस मार्ग को ग्रहण करना चाहिये, उस पर प्रीति करें, यह धर्म है। यहां से आपश्री का विहार सूरत की ओर हुआ। सूरत में प्रथम बार आपश्री का आगमन होने से अपूर्व सत्कार के साथ आपका सामैय्या निकाला गया। पूज्यश्री सागरजी महाराज की मुखमुद्रा शांत और ज्ञानप्रिय थी उस पर अनुपम तेज झलकता था, आपकी सुन्दर आँखों से जैसे जैनत्व का प्रकाश सूरत की स्वर्ण भूमि को प्रकाशवान कर रहा था। आपका आगमन प्रथम बार ही सूरत नगर में हुआ था पहली ही नजर में सूरत के रत्न पारखीयों ने पूज्यश्री को परख लिया था कि यह श्री आनंदसागर करोड़ की कीमत का हीरा है। बाद में तो सूरतवालों से पूज्य श्री सागरजी महाराज का इतना गहरा सम्बन्ध हो गया था कि ऐसा लगता था कि सागरजी महाराज को सूरत से जुदा करना-अलग करना ऐसा है जैसे आत्मा का शरीर से अलग होना है।

श्री मगनभाई भगत

पूज्य प्रवर आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी के पिताश्री श्री मगनभाई धर्म में एकदम चुस्त जिनशासन के प्रति दृढ़ मनुरागी,तत्वज्ञानी और प्रबल वैरागी बन सके ऐसी योग्यता के धनी थे पूज्य मुनिवर्य श्री झवेरसागरजी महाराज (पूज्य सागरजी महाराज के गुरुदेवजी) जो आगम धुरंधर, शासन द्वेषियों को हराने वाले वादि विजेता महामुनि थे।ऐसे मुनिश्री के सम्पर्क में श्री मगनभाई निरंतर रहते थे। उनसे तत्वचर्चा पत्र व्यवहार बार-बार दर्शन करते जाना आदि कारणों से श्री मगनभाई का जीवन पूर्ण रूप से धार्मिक बन गया था। इसके कारण वे सब लोगों की नजर में भगत के नाम से प्रसिद्ध हो गये थे। पूज्य गुरुदेव श्री झवेरसागरजी भी श्री मगनभाई को भगत के उच्चारण से ही सम्बोधित करते थे और यही नाम पत्र व्यवहार में भी सम्बोधित करते थे।

आईये जैन धर्म को जाने- पुद्गल

प्रश्न- पुद्गल किसे कहते हैं ?

उत्तर- जो वर्ण, गंध, रस एवं स्पर्शयुक्त हो अर्थात् जिसे देखा जा सके, सूंघा जा सके, चखा जा सके एवं स्पर्श किया जा सके उसे पुद्गल परमाणु कहते हैं।

प्रश्न- सजातीय पुद्गल-समुह को क्या कहते हैं ?

उत्तर-वर्गणा।

प्रश्न- पुद्गल शब्द का अर्थ क्या है ?

उत्तर-जो पूर्ण गलन-मिलन धर्मा है वह पुद्गल है। स्निग्ध या रुक्ष कणों की वृद्धि का नाम ''पूरण'' और उनकी संख्या की हानि का नाम गलन है।

प्रश्न- पुद्गल और परमाणु में क्या फर्क है ?

उत्तर- जैन परिभाषा के अनुसार अभेद्य, अछेद्य अग्राह्य, अदाह्य और निर्विभागी पुद्गल को परमाणु कहा जाता है। एक पुद्गल-परमाणु एक वर्ण, एक गंध, एक रस व दो स्पर्शवाला होता है।

प्रश्न- पुद्गल-परमाणु संख्या में कितने हैं ?

उत्तर- पुद्गल-परमाणु संख्या में अनन्तानन्त है।

प्रश्न- पुद्गल की परिणति कितने प्रकार की होती है ?

उत्तर- दो प्रकार की- सूक्ष्म और बादर।

प्रश्न-प्राणियों से संबंध रखने वाले विश्व के समस्त पुद्गलों को कितने भागों में विभाजित किया जा सकता है ?

उत्तर-प्राणियों से संबंध रखनेवाले विश्व के समस्त पुद्गलों को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं-चतुःस्पर्शी और अष्टस्पर्शी।

प्रश्न- चतुःस्पर्शी किसे कहते हैं ?

उत्तर- वे पुद्गल,जिनमें वर्ण, गंध, रस के साथ शीत, उष्ण, स्निग्ध और रुक्ष ये चार स्पर्श हो, चतुःस्पर्शी कहलाते हैं।

प्रश्न-अष्टस्पर्शी किसे कहते हैं ?

उत्तर- वे पुद्गल, जिनमें वर्ण, गंध, रस के साथ हलकापन, भारीपन आदि आठों स्पर्श हों, अष्टस्पर्शी कहलाते हैं।

प्रश्न- सूक्ष्म और बादर पुद्गल कितने स्पर्शी होते हैं ?

उत्तर- सूक्ष्म पुद्गल चतुःस्पर्शी और बादर पुद्गल अष्टस्पर्शी होते हैं।

प्रश्न- सामान्य रुप से जीव के काम में आनेवाली पुद्गल वर्गणाएं कितने प्रकार की होती है ?

उत्तर-जीव के काम में आनेवाली पुद्गल वर्गणाएं आठ प्रकार की है जिनका उपयोग जीव करता है। उनके नाम है- 1- औदारिक वर्गणा 2-वैक्रिय वर्गणा 3- आहारक वर्गणा 4-तेजस वर्गणा 5- कार्मण वर्गणा 6- मन वर्गणा 7- वचन वर्गणा 8- श्वासोच्छवास वर्गणा।

प्रश्न- ये वर्गणाएं कितने स्पर्श वाली है ?

उत्तर- आठ वर्गणाओं में औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तेजस वर्गणाएं आठ स्पर्श वाली है। कार्मण, मन व वचन वर्गणा चतुःस्पर्शी होती है। श्वासोच्छवास वर्गणा दोनों प्रकार की होती है।

प्रश्न- निर्जरता कर्म वर्गणा चतुःस्पर्शी ही रहती है या अष्टस्पर्शी भी हो सकती है ?

उत्तर- निर्जरण के बाद कर्म वर्गणा, कर्म वर्गणा नहीं रहती वे केवल पुद्गल रह जाते हैं। ये चतुःस्पर्शी रह कर कभी भाषा, मन आदि रुप में प्रयुक्त हो सकते हैं, आहारक, तेजस, वैक्रिय आदि अष्टस्पर्शी वर्गणा के रुप में भी परिणत हो सकते हैं। स्कन्ध से अलग है। परमाणु रुप में द्विस्पर्शी भी बन सकते हैं। पुनः कर्म वर्गणा के रुप में भी परिणत हो सकते हैं।

प्रश्न- लोक में द्रव्य छः हैं फिर जीव के साथ पुद्गल ही आबद्ध क्यों होता है ?

उत्तर- लोक में द्रव्य छः है फिर धर्म, अधर्म, आकाश, काल, पुद्गल और जीव। धर्म, अधर्म और आकाश समूचे लोक में व्याप्त होने से वे जीव में भी व्याप्त है पर उनका जीव के साथ वैसा संयोग नहीं, जैसा पुद्गल का है। धर्म आदि संबंध स्पर्श रुप है, जबकि पुद्गल का संबंध बंधन रुप। इस तरह जीव और पुद्गल दो ही पदार्थ ऐसे है जो परस्पर आबद्ध हो सकते हैं। पुद्गल के अतिरिक्त अन्य कोई पदार्थ नहीं, जो जीव के साथ आबद्ध हो सके।

सागर का जन्म महोत्सव- सूरत में एक अद्भुत प्रसंग

विक्रम संवत 2004 की आषाढी अमावस्या वृहस्पतिवार दिनांक 5/8/1948 का मंगलमय दिवस सूर्यपुर (सूरत) के आंगन में पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज की 74वें जन्म महोत्सव प्रसंग पर हुआ स्वर्ण महोत्सव के रूप में याद किया जाता है। इस मंगलमय प्रसंग पर ताम्रपत्र जैनागम मंदिर में आंगी पूजा भावना श्री अनंतनाथजी मंदिर में आंगी पूजा व्याख्यान में लड्डू की प्रभावना रखी गई थी।

इस अवसर पूज्य आगमोद्धारश्री ने लगभग एक घंटा 10 मिनट व्याख्यान दिया था और फरमाया था कि हीरे की कीमत जानकार ही करता है,बालक नहीं, बच्चा उसे कांच की गोटी ही समझता है। बच्चा उसके वास्तविक स्वरूप को जाने बगैर देखता है जबकि जवेरी हीरे के स्वरूप को देखकर समझता है। व्याख्यान की समाप्ति के बाद पूज्य गुरुदेव के जीवन पर श्राविका बहनों ने एक ऐसी गहुली का गान किया जिसमें उनके सम्पूर्ण जीवन की झलक मिलती थी। गहुली सुन श्रीसंघ आनंदित हो गया। इसके बाद सेठ श्री डाकोरभाई वकील ने गुरुदेव की यशोगान से आनंद ला दिया। उन्होंने कहा कि -व्याख्यान में कहा गया कि सिद्ध वस्तु का विवेचन करने की जरूरत नहीं होती है जैन गगन में पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री एक सिद्ध प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित अजोड़ आचार्यश्री हैं। समस्त जैन संघ और सूरत के जैन संघ आपश्री की 74वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर दीर्घायुष्यवान हो ऐसी इच्छा है। इसके बाद सुश्रावक धर्म परायण डाकोरभाई दयाचंदमलजी ने बताया कि- शासन प्रभावक श्री देवार्दिकगणि सश्रमण के बाद आगम की अमूल्य विरासत चतुर्दिक संघ को प्रदान कर और सुस्थिर बनाकर पूज्य आगमोद्धारक आचार्य देवेश ने वर्तमानकालीन आचार्यों में कीर्तिरूप नदी के प्रवेश बगैर यशसागर भरा गया उसे जैन शासन में अखण्डित रखने का आपश्री ने विशिष्ट कार्य किया है उपसंहार करने के लिये पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज के परम विद्वान सुशिष्य पन्यासप्रवर श्री चंद्रसागरजी गणि जी ने पूज्य गुरुदेव के गुणगान किये एवं अपना सारगर्भित व्याख्यान दे सर्वमंगल का श्रवण कराया ओर संघ विसर्जन हुआ ।

सागर और शिलात्कीर्ण एवं ताम्रपत्र आगम

परम पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज जैसे अलौकिक गुणनिधान महापुरुष ने अपनी सम्पूर्ण जिंदगी में जैन जगत को अनमोल धरोहर तीर्थंकर परमात्मा की अमृतवाणी के संग्रह कोष आगम शास्त्रों को पुनर्जीवित कर अद्भुत साहित्य आराधना की है। उन पूज्यश्री की एकाग्रता तथा कार्यपरायणता से ही आज विद्वानों को जैन साहित्य का बहुत बड़ा भाग सुलभ है। वे अपनी धुन के इतने पक्के थे कि कोई भी आरंभ किया काम अकेले ही पूरा करने में कभी भी नहीं चुके और न ही हिचके। उनकी चिर-साहित्योपासना आज हमारे पास विविध रूप में विद्यमान है। आपश्री महापुरुष ने शासन की परिस्थिति और श्रवण संस्था की पवित्रता उसकी उच्चता के परमाधार स्वरूप मूलभूत तत्वों का सच्चा निदान कर अथाह परिरम, अतुल ज्ञान और अदम्य उत्साह के बल पर अकेले ही प्रेस कापी, सुधारना, प्रुफ संशोधन प्रस्तावना लेखन से लेकर प्रकाशनीय आर्थिक व्यवस्था आदि बोझ को सफलतापूर्वक उठाकर बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध (विक्रम संवत 1970) में जैन शासन के श्री चरणों में श्रवण संस्था की सेवा में आगम ग्रंथों की पवित्र पावन विरासत को योग्यता सम्पन्न अधिकारी श्रावण लाभ ले सके इस दृष्टिकोण से योजनापूर्वक समर्पित किया है।

आगम वाचना देने के उपरांत आपश्री ने आगम छपवाये, आगमोद्धारक नाम को सार्थक करते हुए दिगम्बरों की इस बात को झूठा सिद्ध किया कि आगम नष्ट हो गये हैं। आपश्री ने जो आगम ग्रंथ अप्राप्त की स्थिति में पहुंच गये थे उन्हें पहले कागज पर व्यवस्थित नकल करवाई। फिर विचार किया कि ये आगम ग्रंथ अगर शीला पर उत्कीर्ण हो जाये तो अमर हो जाएंगे। शिला टूट भी जायेगी तो उत्कीर्ण आगम मिलेंगे ही। सम्राट अशोक ने भी अपने राज्यकाल और किये उत्थान के कामों के लिये शिलालेख लिखवाये थे। पर यहां से परमाघर तीर्थ का प्रभु की वाणी के सुरक्षित करने वाला महान कार्य था। भविष्य में शिला उत्कीर्ण आगम अपनी कहानी खुद कहेंगे। इस विचार के साथ आपने कार्य सम्पन्न करने का निश्चय किया। आगे और विचारों में प्रगाढ़ता आने से आगम मंदिर निर्माण की परिकल्पना ने जन्म लिया, जिसे आपश्री ने अपने जीते जी सार्थक कर दिखाया।

45 आगम वर्गीकरण

क्र. आगम के नाम	सूत्र	क्र. आगम के नाम	सूत्र
01-आचार	अग सूत्र-1	25-आतुरप्रत्याख्यान	पयन्ना सूत्र-2
02-सूत्रकृत	अंगसूत्र-2	26-महाप्रत्याख्यान	पयन्ना सूत्र-3
03-स्थान	अंगसूत्र-3	27-भक्तपरिज्ञा	पयन्ना सूत्र-4
04-समवाय	अंगसूत्र-4	28-तंदुलवैचारिक	पयन्ना सूत्र-5
05-भगवती	अंगसूत्र-5	29-संस्तारक	पयन्ना सूत्र-6
06-ज्ञाता धर्मकथा	अंगसूत्र-6	30-1-गच्छाचार	पयन्ना सूत्र-7
07-उपासक दशा	अंगसूत्र-7	30-2-चन्द्रवेध्यक	पयन्ना सूत्र-7
08-अंतकृत दशा	अंगसूत्र-8	31-गणिविद्या	पयन्ना सूत्र-8
09-अनुत्तरोपपातिक दशा	अंगसूत्र-9	32-देवेन्द्रस्तव	पयन्ना सूत्र-9
10-प्रश्नव्याकरण दशा	अंगसूत्र-10	33-वीरस्तव	पयन्ना सूत्र-10
11-विपाक श्रुत	अंगसूत्र-11	34-निशोध	छेद सूत्र-1
12-औपपातिक	उपांग सूत्र-1	35-बृहत्कल्प	छेद सूत्र-2
13-राजपश्चिय	उपांग सूत्र-2	36-व्यवहार	छेद सूत्र-3
14-जीयाजीवाभिगम	उपांग सूत्र-3	37-दशाश्रुतस्कन्ध	छेद सूत्र-4
15-प्रज्ञापना	उपांग सूत्र-4	38-जीतकल्प	छेद सूत्र-5
16-सूर्यप्रज्ञप्ति	उपांग सूत्र-5	39-महानिशीद	छेद सूत्र-6
17-चन्द्रप्रज्ञप्ति	उपांग सूत्र-6	40-आवश्यक	मूल सूत्र-1
18-जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति	उपांग सूत्र-7	41-1-ओघनिर्युक्ति	मूल सूत्र-2
19-निरपोचलिका	उपांग सूत्र-8	41-2-पिंडनियुक्ति	मूल सूत्र-2
20-कल्पवतसिका	उपांग सूत्र-9	42-दशवैकालिक	मूल सूत्र-3
21-पुष्पिका	उपांग सूत्र-10	43-उत्तराध्ययन	मूल सूत्र-4
22-पुष्पचुलिका	उपांग सूत्र-11	44-नन्दी	चूलिका सूत्र-1
23-वृष्णिदशा	उपांग सूत्र-12	45-अनुयोगद्धार	चूलिका सूत्र-2
24-चतुःशरण	पयन्ना सूत्र-1		

आगमोद्धारक की सदस्यता एवं श्रुतभक्ति में दान देने के लिये ऑन लाईन बैंक की जानकारी

महोदय,

आगमोद्धारक की सदस्यता प्राप्त करने के लिये सदस्यता शुल्क एवं श्रुतभक्ति दान आप ऑन लाईन जमा कर सकते है। आपकी धनराशि भेजने के लिये:-

बैंक का नाम:- इण्डियन ओवरसीज बैंक, शाखा नईसड़क उज्जैन (म.प्र.)

खाता:- श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं.:- 068002000001425 IFSC Code:- IOBA0000680

पूज्य आगमेध्दारकश्री के उपदेश से स्थापित विशिष्ट संस्थाएं ज्ञानमंदिर, उपाश्रय आदि

विक्रम संवत् १९६४	सेठ देवचंद लालभाई जैन पुस्तकों द्वारा फंड, सूरत
विक्रम संवत् १९६८	श्री जैन तत्वबोध पाठशाला,सूरत
विक्रम संवत् १९७१	श्री आगमोदय समिति, सूरत
विक्रम संवत् १९७३	श्री राजनगर जैन श्वे. मू. धार्मिक इनामी परीक्षा, अहमदाबाद
विक्रम संवत् १९७५	श्री जैनानन्द पुस्तकालय, सूरत
विक्रम संवत् १९७७	श्री ऋषभदेव केशरीमलजी की पेढ़ी, रतलाम
विक्रम संवत् १९७८	शैलाना (मालवा) जैन उपाश्रय, शैलाना
विक्रम संवत् १९८०	श्री जैन श्वे.मू.तपगच्छ उपाश्रय, ९६, केनींग स्ट्रीट, कलकत्ता
विक्रम संवत् १९८०	श्री विनयमणि जीवन ज्ञान मंदिर, लकत्ता
विक्रम संवत् १९८१	श्री हिन्दी जैन साहित्य प्रचारक फंड, अजीमगंज
विक्रम संवत् १९८३	श्री जैनामृत समिति, उदयपुर
विक्रम संवत् १९८४	श्री नवपद आराधक समाज, अहमदाबाद
विक्रम संवत् १९८५	श्री वर्धमान तप आयंबिल-भवन, जामनगर
विक्रम संवत् १९८६	श्री नगीनभाई मंछुभाई जैन साहित्योद्धारक फंड, सूरत
विक्रम संवत् १९८८	श्री सिद्धचक्र साहित्य प्रचारक समिति, बंबई
विक्रम संवत् १९९२	श्री जैन आनन्द-ज्ञानमंदिर, जामनगर
विक्रम संवत् २००२	श्री आगमोद्धारक संस्था, सूरत
विक्रम संवत् २००२	श्री आनन्दसागर सूरीश्वरजी पाठशाला, सूरत
विक्रम संवत् २००५	श्री जैन पुस्तक प्रचारक संस्था,सूरत

त्रिपुटी

आगम ज्योर्तिवादि विजेता पूज्य आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज संवत 1943 में छाणी पधारे थे, यहां पण्डित गजारामजी शास्त्री के पास आपने शास्त्र अभ्यास किया था। इस समय आपके साथ आपके बड़े भाई पू. मणिविजयजी महाराज तथा श्री विजय नेमि सूरीश्वरजी महाराज भी शास्त्रीजी के पास ही अध्ययन अभ्यास कर रहे थे। इन तीनों महात्मा की संगत से इनकी प्रसिद्धि त्रिपटी के नाम से हो गई थी।

भरहेसर सज्झाय

सूत्र परिचय के अंतर्गत हम प्रातः स्मरणीय 53 महापुरुष तथा 47 महासतियों का स्मरण करानेवाली भरहेसर की सज्झाय जो प्रातःकाल में राई प्रतिक्रमण में बोली जाती है, इस सज्जाय के टीकाकार परम पूज्य शुभशीलजी है। हम इस सज्झाय में आये महापुरुष और सतियों से आपका परिचय कराने जा रहे है। आनेवाले अंक में भी जब तक सभी 100 महान आत्माओं का परिचय पूर्ण नहीं हो जायेगा, हम इसे चालू रखेंगे। - सम्पादक

1- भरेहसर-भरत चक्रवती, 2- बाहुबली-बाहुबली, 3- अभयकुमारो-अभयकुमार, 4- ढंढणकुमारो-ढढण कुमार, 5- सिरयो-श्रीयम, 6- अणिआउत्तो-अर्णिकापुत्र आचार्य, 7- अइमुत्तो-अतिमुक्त मुनि, 8- नागदत्तो-नागदत्त 9-मेअज्ज-मोतार्य मुनि, 10-धूलभद्दो-स्थूलभद्र, 11-वयररिसी-वज्रस्वामी, 12-नंदिसेण-नंदिषेण, 13-सिंहगिरी-सिंहगिरी, 14- कथवन्नो-कृतपुण्यक (कयवन्ना सेठ), 15- सुकोशन-सुकोशल मुनि, 16- पुंडरिया-पुंडरिक, 17- केसि-केशो गणधर, 18- करकंडू- राजर्षि करकंडू, 19- हल्ल-हल्ल, 20-विहल्ल-विहल्ल, 21-संदुसण-सुदर्शन, 22- साल-शाल, 23-महासाल-महाशाल, 24- सालिभद्दो-शालीभद्र, 25- भद्दो-भद्रबाहु स्वामी, 26- दसन्नभद्दो- दर्शनभद्र राजा, 27-पसन्नचंदो-प्रसन्नचंद्र राजा, 28-जसभद्दो- यशोभद्र सूरि, 29- जंबुपहू-जंबूस्वामी, 30- ढंकचूलो- वकचूल 31- गयसुकुमालो-गजसुकुमाल, 32- अवंतिसुकुमालो-अवंतिसुकुमाल, 33- धन्नो-धन्यकुमार, 34- इलाइपुत्तो-इलाचीपुत्र, 35- चिलाइ पुत्तो- चिलातीपुत्र, 36- बाहुमुणी-युगबाहु मुनि, 37- अज्जगिरी- आर्य महागिरी, 38-अज्जरक्खिअ- आर्यरक्षित सूरि, 39- अज्जसुहत्थि-आर्य सुहस्तिसूरि, 40- उदायगो-आर्य सुहस्तिसूरि, 41-मणगो-मनक, 42- कालयसूरी-कालकाचार्य 43- संबो-सांब, 44-पज्जुन्नो-प्रद्युम्न, 45- मूलदेवी-मूलदेव, 46-पभवो-प्रभवस्वामी, 47- विण्हुकुमारो- विष्णुकुमार, 48-अद्दकुमारो- आर्द्रकुमार, 49- दढपहारी-दढप्रहारी, 50-सिज्जस-श्रेयांसकुमार, 51- कूरगडु अ- कूरगडु मुनि, 52- सिज्जभव- शय्यभवसूरि, 53- मेहकुमारो-मेघाकुमार।

जेसि नामग्गहणे पावप्पबंधा विलयं जंति।

(जिनके नाम लेने से पाप के दृढबंध नष्ट हो जाते है ऐसे गुण के समुह से युक्त उपरोक्त और उनके जैसे महासात्विक पुण्यात्माओं सुख प्रदान करें।)

1- सुलसा-सुलसा, 2- चंदनबाला-चंदनबाला, 3-मणोरमा-मनोरमा, 4- मयणरेहो-मदनरेखा, 5- दमयंती-दमयंती, 6- नमयासुंदरी- नर्मदासुंदरी, 7- सीया-सीता, 8- नंदा-नंदा, 9- भद्दा-भद्रा, 10- सुभद्दा-सुभद्रा, 11-राइमई-राजीमती, 12- रिसिदत्ता-ऋषिदत्ता, 13-पउमावई-पद्मावती, 14- अंजणा-अंजना सुंदरी, 15-सिरिदेवी-श्रीदेवी, 16-जिट्ठ-ज्येष्ठा, 17- सुजिट्ठ-सुज्येष्ठा, 18- मिगावई-मृगावती, 19- प्रभावई-प्रभावती, 20- चिल्लणादेवी-चेल्लणा, 21- बंभी- ब्राह्मी, 22-सुदंरी-सुदंरी, 23- रुप्पणी-रुकमणी, 24- रेवइ-रेवती, 25- कुंती-कुंती, 26- सिवा-शिवादेवी, 27- जयंती-जयंती, 28- देवई-देवकी, 29- द्रोवई-द्रोपदी, 30-धारणी-धारिणी, 31-कलावई-कलावती, कण्हड्ड महिसीओ- 32- पुष्पचूला- पुष्पचूला, 33-पद्मावती, 34-गौरी, 35-गंधारी, 36- लक्ष्मणा, 37- सुसीमा, 38-जुबूवती, 39- सत्यभामा, 40- रुकिमणी, भयणओ-थुलभद्दस्स- 41- यक्षा, 42- यक्षदत्ता, 43- भूता, 44- भूतदत्ता, 45- सेणा, 46- वेणा, 47- रेणा।

महापुरुषः- 1- भरतः- श्री ऋषभदेव भगवान के सबसे बड़े पुत्र और प्रथम चक्रवर्ती। ये एक समय अरीसा-भवन में अपने अलंकृत शरीर को देखरहे थे इतने में उंगली में से अंगूठी निकल गई, इसलिये वह शोभारहित लगने लगी। यह देखकर अन्य अलंकार भी उतारे, तो सारा शरीर शोभा रहित लगने लगा। इससे **''अनित्य संसारे भवति सकलं यन्नयठाम्''** संसार में जो वस्तुएं देखी जाती है, वे सब नश्वर है, ऐसी अनित्य-भावना होने लगी और केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। तब इन्द्र महाराज ने आकर कहाकि- ''आप द्रव्यलिंग धारण करिये, हम दीक्षा का महोत्सव करते है।''

इन्होंने पंचमुष्टि-लोच किया और देवताओं से दिये गये रजोहरण-पात्र आदि ग्रहण किये। अन्त में अष्टापद पर्वत पर निर्वाण को प्राप्त हुए।

2- बाहुबली:- भरत चक्रवर्ती के छोटे भाई। भगवान् ऋषभदेव ने उनको तक्षशिला का राज्य दिया था। उनका बाहुबल असाधारण था, इस कारण चक्रवर्ती की आज्ञा नहीं मानते थे। इससे भरत चक्रवर्ती ने उन पर चढ़ाई की और दृष्टियुद्ध, वाग्ययुद्ध, बाहुयुद्ध और दण्डयुद्ध किया, जिसमें वे हार गये। अन्त में भरत ने मुष्टि प्रहार किया, उससे बाहुबली कटि (कमर) तक जमीन में घुस गये। उसका प्रत्युत्तर देने के लिये बाहुबली ने भी मुट्ठी उठायी। यदि यह मुष्टि भरत पर पड़ी होती तो उनका प्राण निकल जाता परन्तु इसी समय बाहुबली की विचारधारा पलट गई कि नश्वर राज्य के लिये बड़े भाई की हत्या करनी उचित नहीं, इससे मुट्ठी वापस नहीं उतारते हुए उससे मस्तक के केशों का लोच किया और भगवान श्रीऋषभदेव के पास जाने को तत्पर हुए, किन्तु उसी समय विचार आया कि मुझसे छोटे अठानवे भाई दीक्षा लेकर केवलज्ञान को प्राप्त हुए, वे वहां उपस्थित है उनको मुझे वन्दन करना पड़ेगा अंतः मैं भी केवलज्ञान प्राप्त करके ही वहां जाऊं। इस विचार से वहीं कायोत्सर्ग में स्थिर रहे। एक वर्ष तक उग्रतप करने पर भी उनको केवलज्ञान नहीं हुआ, तब प्रभु ने उनको प्रतिबोध देने के लिये ब्राह्मी और सुंदरी नाम की साध्वियों को भेजा, जो कि संसारी अवस्था में उनकी बहिनें थी। उन्होंने आकर कहा- ''हे भाई हाथी की पीठ से उतरो, हाथी पर चढ़े हुए केवलज्ञान नहीं होता है- **वीरा मोरा गज थकी उतरो, गज चढ्ये केवल न होय रे!**'' यह सुनकर बाहुबली चौक पड़े। यह बात अभिमान रुपी हाथी की थी। अन्त में भावना शुद्ध होने से उन्हें वहीं केवलज्ञान प्राप्त हुआ। तदन्तर वे श्री ऋषभदेव भगवान के पास गये और उनको वन्दन करके केवलियों की परिषद् में विराजित हुए।

3- अभयकुमार:- ये श्रेणिक राजा के पुत्र थे। इनकी माता का नाम सुनन्दा था। बाल्यावस्था में ही खाली कुए में गिरी हुई अंगूठी को अपने बुद्धि-चमत्कार से ऊपर ले आये, जिससे प्रसन्न होकर श्रेणिक राजा ने इनको मुख्यमंत्री बनाया। ये औत्पत्ति की, वैनयिकी कार्मिकी और परिणामिकी- - इन चारों बुद्धियों के स्वामी थे। पिता के कार्य में इन्होंने बहुत सहायता की थी। अन्त में प्रभु श्रीमहावीर से दीक्षा ले, उत्कृष्ट तप कर मोक्ष प्राप्त किया। आज भी व्यापारिक वर्ग शारदा-पूजन के समय अपनी बही में ''**अभयकुमार की बुद्धि हो**'' यह वाक्य लिखकर इनका स्मरण करता है।

4- ढंढणकुमार:- ये श्री कृष्ण वासुदेव की ढंढणा नामक रानी के पुत्र थे। इन्होंने बाईसवें तीर्थकर श्री नेमिनाथ से दीक्षा ग्रहण की थी, परन्तु पूर्व-कर्म के उदय से शुद्धभिक्षा नहीं मिलती थी, इसलिये अभिग्रह किया कि ''**स्वलब्धि से भिक्षा मिले तब ही लेनी।**'' एक समय भिक्षा के लिये ये द्वारिका में फिरते थे, उस समय श्रीकृष्ण ने वाहन (रथ) से नीचे उतरकर भक्तिभाव से वन्दन किया। यह देखकर किसी श्रेष्ठि ने उनको उत्तम मोदक वहोराये (भिक्षा में दिये), परन्तु यह आहार ''यह आहार स्वलब्धि से नहीं मिला'' ऐसा प्रभु के मुख जानकर, उसको कुम्हार की शाला में परठवने के हेतु चले। उस समय उत्तम भावना करने से केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। **(आगे और भी है...!)**

कथ्यम्.....पूज्य सागरजी म.सा.

❋ मोहवासना के आधीन बना व्यक्ति संयम का त्याग कर सकता है तो किसी की प्रेरणा पाकर व्यक्ति संयम में स्थिर भी हो सकता है।

❋ आलोचना, निंदा, गर्हा, प्रायश्चित, प्रत्याख्यानादि करता हुआ जीव पुनः शुद्धरूप से चारित्र की आराधना कर सकता है और सर्वकर्मों का मूलतः क्षय कर सकता है।

❋ अपने श्रेष्ठ कुल, धर्म और स्वीकृत मर्यादाओं को पुनः पुनः याद करते रहने से व्यक्ति हीन आचरण से बच सकता है।

❋ व्रतों की अखंडरूप से आराधना का संकल्प खुद को और अन्य को उन्मार्ग-कुमार्ग से बचा सकता है।

❋ जो स्वयं नियमों का पालन करता हो वो यदि किसी को नियम का उपदेश दे तो उसका उपदेश अवश्यमेव प्रभावी बनता है।

❋ उत्तमकुल में उत्पन्न व्यक्ति प्राण छोड़ सकते है मगर किसी भी परिस्थिति में अपनी स्वीकृत मर्यादाओं का त्याग नहीं कर सकते।

❋ धीरज दृढ़ता और संकल्प से व्यक्ति हर आपदा में से अपने लिये सुरक्षित मार्ग खोज सकता है, बना लेता है।

❋ असंयमी को धिक्कार और संयमी को धन्यवाद। संयम और असंयम का संबंध मात्र ब्राह्य वेषभूषा से ही नहीं बल्कि आंतर्भावनाओं से भी है। यदि आंतर्भावना शुद्ध और दृढ़ है तो वैसा व्यक्ति किसी भी निमित्त को पाकर कभी असंयमी नहीं बनता।

❋ उन्मार्ग की ओर बढ़ते हुए को सन्मार्ग पर स्थिर करना यही साधुता है, यही साधु पुरूषों का कार्य है।

दस प्रकार के भवनापति देव

क्रम	देवता का नाम	दक्षिणेन्द्र का नाम	पटरानी	उत्तर इन्द्र	पटरानी
1-	असुर कुमार	अमरेन्द्र	5	जलीन्द्र	5
2-	नागकुमार	धरणेन्द्र	6	भूतानेन्द्र	6
3-	सुवर्णकुमार	वेणुदेवेन्द्र	6	वेणुदालीन्द्र	6
4-	विद्युतकुमार	हरिकान्तेन्द्र	5	हरिस्सदेन्द्र	6
5-	अग्निकुमार	अग्निशीजेन्द्र	6	अग्निमानवेन्द्र	6
6-	द्वीपकुमार	पर्णेन्द्र	6	वसिष्ठेन्द्र	6
7-	उद्दधिकुमार	जयकांतेन्द्र	6	नीलप्रभेन्द्र	6
8-	द्वीपकुमार	अभितगतीन्द्र	6	अभितवाहनेन्द्र	6
9-	वायुकुमार	वेसंनेन्द्र	6	प्रलभनेन्द्र	6
10-	स्तनितकुमार	घोपेन्द्र	6	महाघोषेन्द्र	6

आठ प्रकार के व्यतंर देव

क्रम	व्यंतर देवता का नाम	दक्षिणेन्द्र	उत्तरेन्द्र	वाणव्यंतर	दक्षिणेन्द्र	उत्तरेन्द्र
1-	पिशाय	काण	महाकाण	अणपन्नी	सन्निहीत	सामानित
2-	भूत	सुरुप	प्रतिरुप	पणपन्नी	धाता	विधाता
3-	यक्ष	पूर्णभद्र	मणिभद्र	हषिवादी	ऋषि	महाऋषि
4-	राक्षस	भीम	महाभीम	भूतवादी	ईश्वर	महेश्वर
5-	किन्नर	किन्नर	किंपुरुष	कंदृित	सुवत्स	विशाल
6-	किंपुरुष	सत्पुरुष	महापुरुष	महाकंद्दित	हास्य	हास्यरति
7-	महोरग	अग्निकाय	महाकाण	कोकंद्द	श्रेयांस	महाश्रेयांस
8-	गंधर्व	गीतरति	गीतयश	पतंग	पद्य	पद्यपति

गुर्वाज्ञा शिरोधार्य

गरूयगुणेहिं सीसो अहिओ गुरुणो हविज्ज जई कहवि।
तहवि हु आणा सीसे सीसेहिं तस्स धरियव्वा ॥

✻ श्री धर्माचार्य बहुमान

अर्थात्-कदाचित् शिष्य गुणों से या अन्य कोई बातों में गुरु से भी श्रेष्ठ हो तो भी उसे गुरु की आज्ञा को पूर्ण समर्पण के साथ शिरोधार्य करना चाहिए।

अहंकार से अधोगति

जातिलाभकुलैश्वर्य बलरुपतपः श्रुतैः ।
कुर्वन् मदं पुनस्तानि हीनानि लभते जनः ॥

अर्थात्- जाति-लाभ-कुल-ऐश्वर्य-बल-रुप-तप-ज्ञान, इन आँठ का गर्व करनेवाले जीव को भविष्य में यह आँठों पदार्थ हीनकक्षा के प्राप्त होते है।

– श्री हेमचन्द्राचार्य

।। श्री परमात्माय नमः ।।

जीवदया फंड

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत - 1
मो.: 09825414470 / 9820078772
स्थापना वि. सं. 1962
इ.स. 1906 रजि. नं.- 1744
PAN : AAATS8024L

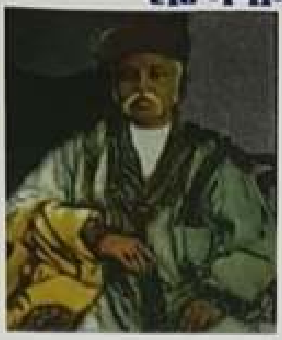

शेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी

पैसा भेजने का पता :

प्रफुल अमीचंद झवेरी

26, खटाऊवाडी, गोरेगांवकर लेन,
सेन्ट्रल सिनेमानी पाछळ,
मुंबई - 400 004.
ऑफिस फोन : 2387 8476
मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सद्गृहस्थश्री, सादर प्रणाम !

जीवदया फंड संस्था सुरत के दानवीर शेठ श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी के प्रयासो के द्वारा स्थापित एक रजीस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फंड संस्था के द्वारा कतल के लीये जानेवाले ओर बीन उपयोगी जीवो को छुडवाकर के सुरत की पांजरापोल में भेजा जाता है। यह कार्य पीछले ११४ सालो से यह संस्था कर रही है । ओर शेठश्री के उत्तम पुन्यबल की वजह से यह कार्य के अंदर लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है । जैसे की पीछले पांच सालो के दौरान (एप्रील - २०१४ से मार्च - २०१९) १०७९८ जीवो को छुडाया / बचाया गया है ।

हमारे आंगन में आनेवाले बेझुबान जीवो को पांजरापोल के अंदर ट्रस्टीओ के द्वारा नीगरानी करके सोंपा जाता है । ओर पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उनको संभालकर रखा जाता है ।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है । अहिंसा ओर जीव के उपर मैत्री । सर्वज्ञश्री के यह संदेश को सार्थक करने के लिये दीनो का भी बहुत बडा महत्व है । जैसे की

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन
पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है ।

आपके परिवार मे आये हुए शुभ लग्नोत्सव के दीन
एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है ।

कर्मसंयोग के कारन आई हुई बीमारी का दुःख ओर अशाता को टालने के लीये
कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करे ।

अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को
मृत्यु के मुखमें से छुडवाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है ओर आपके स्वजन की सदगति प्राप्ती की प्रार्थना भी कर सकते है ।

पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीवको
जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया ओर करुणामय बनाये ।

आपश्री हंमेशा के लीये तिथि का भी चयन कर सकते है। यह तिथि के दीन दान में दी गई रकम का जो ब्याज मीलता है उसमें से जीव को छुडवाया जायेगा ।

यह संस्था के द्वारा एप्रील २०२० से मार्च २०२१ के एक वर्ष के समय जो की लोकडाउन था, उस समय में कुल २५९१ जीवो को छुडवाया गया है ।

आपश्री चेक या ड्राफ्ट जीवदया फंड के नाम का बनाए। रोकड रकम में भी आप योगदान दे सकते है। (आपश्री का अनमोल योगदान सुरत ओर मुंबई में उपर दिये गये पते पर भीजवा सकते है।)

आपश्री आपका योगदान हमारे बेन्क खाते के अंदर भी जमा करवा सकते है । जीसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80-G नंबर AAATS 8024 LF 20210 है ।

Bank Name	: AXIS BANK LTD.	Bank Name	: BANK OF INDIA
A/c. Name	: JIVDAYA FUND	A/c. Name	: JIVDAYA FUND
IFSC	: UTIB0002274	IFSC	: BKID000001
A/c. No.	: 921010033621820	A/c. No.	: 00120100001219
Branch	: Charni Rd, Mumbai	Branch	: Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से कीये हुए कार्य से अक्षय सुख ओर मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है ओर नरकगति के कर्म का ओर अनेक भवो के पापो का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनो लोकमें श्रेष्ठ ओर सर्वोत्तम कार्य है ।

दान अेज सफल जीवन

लि. ट्रस्टीगण

प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी

नलीनभाई फकीरचंद
शरदभाई गुलाबचंद कांटावाला
उषाकांत साकेरचंद झवेरी

वर्ग पहेली क्रमांक-351

✲ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1		2	3		4		5	
		6						
7	8				9	10		11
	12	13		14				
15								
				16	17		18	
19	20		21				22	23
			24			25		
26					27			

बाएं से दाएं:-

1- नाभिराजा-मरुदेवी के नंदन--- भगवान (4)
4- बीस विहरमानजी में से एक --- स्वामी (4)
6- कांकरोली के निकट दयालशाह का किला वाला आदिनाथ भगवान का तीर्थ --- र (4)
7- करत करत अभ्यास के ज---ति होत सुजान, रसरी आक्त जात ते सिल पर परत निशान (2) - कवि वृंद
9- राजा मेघरथ के पिता का नाम --- (4)
12-भ.महावीर की बहन का नाम --- (4)
16-अलवर में बिराजे है श्री--- र्श्वनाथ (3,1)
19----है तेरा तारणहारा कब तेरा दर्शन होगा, जिनकी जिसकी प्रतिमा इतनी सुंदर, वो कितना सुंदर होगा (2)
22-आत्मा अजर अमर होती है, किन्तु देह---र (2)
24-बारह चक्रवर्ती में से एक सन--- (1,3)
26-आचार्य सागरानन्दजी की जन्मतिथि (4)
27-राजगढ़में जन्मे, परम पूज्य मालव भूषण आचार्य श्री ---सागरजी (4)

ऊपर से नीचे:-

1- तपागच्छ का उदगम स्थल--- (3)
2- जय शंखेश्वर ओ परमे--- (2)
3- धूल का पर्याय--- (2)
4- बिम्बिसार (श्रेणिक) का राज्य--- (3)
5- मंदिर आदि धर्म स्थानों पर रखे गये दान पात्र कहलाते है--- (3)
8- ज्ञान बिना जग जीवड़ा, न लहे तत्व संकेत (1,1)
10-राजा श्रेणिक के एक पुत्र का नाम--- (4)
11-सिरोही जिले में स्थित पार्श्व प्रभु का सुंदर तीर्थ उ--- (3)
13-अष्टमंगल में से एक--- (3)
14-प्रथम तीर्थंकर के पिता --- जा (3)
15-आचार्य आनंदसागरजी की माता--- बेन (3)
17-वीर प्रभु के जन्म के बाद माता-पिता ने उनका यह नाम रखा था--- (4)
18-शेरिसा तीर्थ के निकट वीर प्रभु का तीर्थ--- सर (2)
20-समरो मंत्र भलो नवकार, ए छे चौदह पूरब नो सार, ए नी---नो नहीं पार, ए नो अर्थ अनंत अपार (3)
21-भ.महावीर स्वामी की स्तुति जिसकी रचना कलिकाल सर्वज्ञ हेमचंद्राचार्यजी ने की थी--- (3)
23-राजस्थान की राजधानी जयपुर में चार्तुमास हेतु विराजित आचार्य वि---सागर सूरीश्वरजी (3)
25-नव गति, नव लय, ताल छंद नव, नवल कंठ नव, जलद मंद--- नव नभ के नव विहग वृन्द को नव पर नव स्वर दे, वर दे वीणा वादिनी वर दे (2)

वर्ग पहेली क्रमांक-350 का परिणाम

अ	भि	मा	न		व	सु	पू	ज्य
म		न	न्दा	व	र्त		न	
र	वि		व		मा	ता	म	रु
	प्र	व	र्त	क		ल		शि
वा		ल्ल		ल्ह		न		ख
ल		भी		ण	क	पु	र	
म	ण	पु	र		र्णा		ण	मो
	पा		प्र	भा	व	ती		श
पा	र्श्व	प्र	भु		ती	र्थ	क	र

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-351

✲ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

प्रश्न- ग्रंथों के रचियता कौन है ?

1- **शान्त सुधारस,** 2- **उपदेशमाला,** 3- **सिरिसिरि वाला कहा,** 4- **तिलकमंजरी,** 5- **द्वारसार नयचक्र,** 6- **दशवैकलिक,** 7- **ज्ञानसार,** 8- **उपमिति भव प्रपंच** 9- **तत्वार्धाधिगम,** 10- **अष्टान्हिका** 11-**बारसा सूत्र** 12- **जीवविचार।**

नीति-उपार्जित धान्य

✲ पांडवों ने एक तपस्वी ब्राह्मण के लिए भोजन का निमंत्रण भेजा। ब्राह्मण ने अन्यमनस्क मन से स्वीकार तो कर लिया, पर उसकी आँखों में आंसू आ गए।

युधिष्ठर ने सारा वृत्तांत सुना तो उनकी आँखों के आंसू भी न रुके।

इतने में कृष्ण आए। उन्होंने भी अपनी दिव्य दृष्टि से सारा वृत्तांत जान लिया और वे भी रोने लगे। अर्जुन आए तो उन्होंने भी अपने बड़ों को रोते देखा तो आँसू वे भी न रोक सके।

जब ब्राह्मण भोजन कर चुके तो तीनों के प्रसंग में जुड़ी हुई सब बातें उगल देने का अनुरोध किया गया। ब्राह्मण ने कहा- ''नित्य स्वयं उपार्जित खाता था। आज पराया धान्य खाना पड़ेगा। न जाने वह कुधान्य तो न होगा। इस असमंजस्य से मैं दुखी था। राजा का आदेश टालने में भी खैर न थी।

युधिष्ठर ने कहा- ''मैं इसलिए रो पड़ा कि हमारा धान्य यदि नीति-उपार्जित ही होता तो ब्राह्मण को इस असमंजस में न पड़ना पड़ता ?''

कृष्ण ने कहा-''अभी द्वापर है, लोगों को उचित-अनुचित का ज्ञान है, पर आगे ऐसा समय आएगा, जब कुधान्य के लिए सभी लालायित रहेंगे।''

अर्जुन ने कहा- ''हमने महाभारत तो जीता, पर ऐसी व्यवस्था न बनाई, जिससे नीति-निर्धारणों को तोड़ने की किसी की हिम्मत ही न पड़े। अपने कर्त्तव्यों का स्मरण और निर्वाह न हो सकना सचमुच रोने जैसी बात ही है।''

वर्ग पहेली क्रमांक-350 के परिणाम

विजेताः-

1- **श्रीमती चंदनबाला जैन, देवास (म.प्र.) - प्रथम**

2- **भारती जैन, देवास (म.प्र.) - द्वितीय**

3- **श्रीमती शशि भाण्डावत शाजापुर(म.प्र.)- तृतीय**

इनके भी उत्तर सही थेः-

ईश्वरचंद भाडावत, कृष्णकुमार जालौरी, विदिशा, रेशमदेवी कोठारी, नीमच,श्रीमती कुसुम गौतम जैन आगर, प्रीति जैन, नरवर, दर्शना पारिख,मुबंई ,विधा संघवी

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-350 के परिणाम

विजेताः-

1- **श्रीमती चंदनबाला जैन, देवास (म.प्र.) - प्रथम**

2- **भारती जैन, देवास (म.प्र.) - द्वितीय**

सही उत्तर-

1- **जिमणवार,** 2- **हथियार,** 3- **मकान,** 4- **पश्चाताप,** 5- **अहंकार,** 6- **मरण,** 7- **रविवार,** 8- **खुशामत,** 9-**भावयात्रा,** 10- **परिवार,** 11-**नवकार।**

✲ गुरुदेव के प्रभाव से भी सास का प्रभाव बढ़ गया व बहु का तपभाव मन ही मन मर गया।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-8-2024 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

सूचना– अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

जयपुर चार्तुमास में युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी ने अपने शिष्य को भगवती सूत्र के योगोध्दहन की अद्भूत भेंट दी

✻ चार्तुमास प्रवेश जयपुर के लिये यादगार बना : 300 से अधिक गुरु भक्तों का आगमन देशभर से हुआ।

✻ मुनिराज श्री कीर्तिरत्नसागरजी म.सा. ने 17 जुलाई से भगवती सूत्र के योगोध्दहन की क्रिया आरंभ की।

✻ गणि पदवी मालवा में ही होगी। श्री नागेश्वर महातीर्थ की संभावना है।

✻ चार्तुमास प्रवेश पर केन्द्रीय कपड़ा व्यापार मंडल के श्री सुनील सिंधी मुख्य अतिथि रहे।

✻ 250 से अधिक श्रावक-श्राविका 50 दिन का चार्तुमास करेंगे।

✻ आगमोद्धारकश्री के सार्थ शताब्दी पर 4 अगस्त को 1,51,000 सामायिक होगी।

✻ श्री नागेश्वर तीर्थ में पौष दशमी पर 1500 से अधिक अट्ठम तप के अमृत निश्रादाता युवा जैनाचार्य रहेंगे।

✻ मुंबई का पूनम मण्डल आयोजक रहेगा।

जयपुर- वर्तमान तीर्थाधिपति अट्ठम तीर्थंकर परमात्मा भगवान श्री महावीर स्वामीजी का विशाल लाल मंदिर जवाहर नगर ही जयपुर की भी शान है। श्री वीरप्रभु की छत्रछाया में पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण जैनाचार्य श्री नवरत्न सागर सूरीश्वरजी महाराजा के अभूत पूर्व आर्शीवाद और पूज्यश्री नक्शे कदम पर चलते हुए नित्यप्रति शासन प्रभावना के नये इतिहास का सर्जन कर सागर समुदाय के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए सागर समुदाय की अभिवृद्धि कर युवा श्रमण को सम्मिलित करते हुए गुरुदेव के स्वप्न को साकार कर रहे युवा जैनाचार्य पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी महाराजा अमृत निश्रा में अब जयपुर में चार्तुमास का नवीन इतिहास बनाने जा रहे है। इस इतिहास में चार चांद और लग गये, जब पूज्यश्री ने अपने प्रथम सुशिष्य मुनिश्री कीर्तिरत्न सागरजी म.सा. को 17 जुलाई से भगवती सूत्र के योगाध्दहन की आज्ञा पूज्यपाद गच्छाधिपति वचनसिद्ध आचार्य भगवंत श्री नरदेव सागर सूरीश्वरजी महाराजा के आदेश पर प्रदान की। मुनिश्री कीर्तिरत्नसागरजी म.सा. ने भी अपने गुरु के प्रति अहोभाव प्रदर्शित करते हुए कहा-पूर्ण समर्पित जीवन अर्पित गुरु संरक्षण हित आपके योग आरंभ हो गये है। अब चार्तुमास के बाद गणि पदवी का आयोजन होगा। गणि पदवी की संभावना मालवा में होने की है संभवतः श्री नागेश्वर महातीर्थ में हो सकती है। इस महत्वपूर्ण घोषणा के पूर्व पूज्यश्री के साथ साध्वीवर्या श्री सिद्धांत ज्योतिश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का दिनांक 14 जुलाई को यादगार चातुमार्सिक प्रवेश हुआ। तीन हजार

कि.मी. से अधिक का विहार श्री सम्मेद शिखर से नेपाल, उत्तरप्रदेश, दिल्ली होकर राजस्थान की राजधानी जयपुर तक आप पधारे। पूज्यश्री का मान सम्मान रखते हुए आपश्री की गरिमा के अनुकुल जवाहर नगर श्री संघ ने प्रवेश करवाया। जवाहर नगर के राजमार्गो पर यादगार सामैया और उसमें नाचती गाती युवाओं की टोलियां जयनाद कर वातावरण में गुरुभक्ति का परिचय दे रही थी। 300 से अधिक गुरुभक्त मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र से आये थे। लगभग दो घंटे से अधिक समय तक सामैया का शोभा बिखरते श्री वीर प्रभु की छत्रछाया में उपाश्रय में आगमन हुआ। विशाल धर्मसभा में महिला मंडल और संगीतकारों ने गुरु भक्ति पूर्ण प्रस्तुति देकर माहौल को आनंददायक बना दिया था। मुनिश्री तीर्थरत्नसागरजी म.सा. एवं मुनिश्री कीर्तिरत्नसागरजी म.सा.ने अपनी ओजस्वी वाणी में जयपुर चार्तुमास की जोरदार वधावणा की। पूज्यपाद आचार्यश्री ने भी जयपुर तक आगमन को यादगार बतलाया। दोपहर लगभग 2.30 बजे तक चली धर्मसभा को श्री सुनील सिंधीकेन्द्रीय कपडाा मंडल के चेयरमेनश्रीमती निर्मला बहन के साथ अनेक गुरु भक्तों ने संबोधित किया। डॉ. सुभाष जैन, आगमोद्धारक सम्पादक ने भी सामायिक उद्बोधन दिया। जयपुर चार्तुमास इस मायने में भी महत्वपूर्ण हो गया है कि यहां पर लगभग 250 आराधक 50 दिन तक चातुमार्सिक आराधना करेंगे। सबसे महत्वपूर्ण घोषणा मुनिराज श्री कीर्तिरत्नसागरजी म.सा. को चार्तुमास के बाद गणिपदवी के लिये भगवती सूत्र के योगाद्वहन की रही है इसके साथ ही जयपुर चार्तुमास में होने वाले आयोजनों के साथ उपधान तप करवाने की भी चर्चा चल रही है। साथ ही चार्तुमास के बाद श्री नागेश्वर महातीर्थ में परमात्मा श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जन्म-दीक्षा कल्याणक पौष दशमी पर 1500 के लगभग अट्ठम तप आराधना करवाने की भी महत्वपूर्ण घोषणा पूज्यश्री ने की। मानवा आगमन के समय उज्जैन आने की संभावना है। आगमोद्धारकश्री के 150 वें जन्म दिवस पर सार्थ शताब्दी के शुभ प्रसंग पर सम्पूर्ण सागर समुदाय के साथ पूज्यपाद गच्छाधिपति की प्रेरणा से और पूज्य आचार्य देवेश श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी महाराज के मंगल मार्गदर्शन में जन्म दिवस सावन वदी अमावस्या दिनांक 4 अगस्त को भारतभर के श्री संघों में 1,51,000 सामायिक का आयोजन भी होने जा रहा है।

जिन शासन की अद्भूत भक्ति के साथ गुरुदेवश्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा की पाट परम्परा को उज्जवलता प्रदान करने का कार्य जो कार्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वर जी महाराजा के द्वारा संयम जीवन में किया जा रहा है उसकी तुलना में करना आसान नहीं और न ही शब्दों से उसे बंधा जा सकता है। पूज्य युवाचार्य श्री का पुण्यबल और पुण्य का उदय होने के साथ यह निश्चित है कि पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा देह त्याग करने के बाद आपका भरपूर आर्शीवाद युवा आचार्य भगवंत को प्राप्त हो रहा है। युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी महाराजा परमात्मा श्री वीर प्रभु के शासन की अभिवृद्धि के लिये अपने सम्पूर्ण पुण्यबल का सुनियोजित उपयोग कर स्वयं और आपश्री ने गुरुकुल के युवा मुनिपुंग न जिन शासन की भरपूर प्रभावना कर देश भर में जैनत्व का नया इतिहास रच दिया हैं। युवा श्रमण भगवंतों ने अद्भूत शासन भक्तिकर युवा और वरिष्ठधर्मिष्ठों को आकृषित कर जैनत्व का सम्मान किया पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल ने श्री वीरप्रभु के शासन को उज्जवल बनाने के लिये वर्तमानकाल में जैनत्व का शंखनाद कर रहे है।

महाविदेह धाम में उपधान तप

सूरत-महाविदेहधाम वरिष्ठ मार्ग दर्शक आ.श्री रश्मिरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि–51 गुरु भगवंतों की निश्रा में 13 सितंबर से समूह वर्धमान तप पाया का प्रारंभ।✻ 12 अक्टू. से गुरु भक्त परिवार द्वारा उपधान का प्रारंभ होगा। पालीताना व गिरनार का संघ निकलेगा।

केशरवाड़ी में चार्तुमास उपधान तप होगा

चैन्नई- शत्रुंजय अवतार स्वरुप श्री केशरवाड़ी तीर्थ में पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री विजय उदयप्रभ सूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में भव्य चार्तुमास और उपधान तप का आयोजन होगा। पूज्यश्री का चार्तुमास प्रवेश दिनांक 14 जुलाई को हुआ। महापर्व पर्युषण दिनांक 31 अगस्त से आरंभ होंगे। उपधान तप की आराधना दिनांक 20 अक्टूबर से होगी तथा मोक्षमाल 8 दिसंबर को होगी।

श्री रश्मिरत्नसूरीजी का चार्तुमास सूरत-रांदेररोड़संघ में

सूरत- श्री सूरत-रांदेररोड़ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय, सुंदरबा आराधना भवन में आजीवन गुरु गुणचरणोपासक श्रमणी गणनायक जैनाचार्य श्री रश्मि रत्नसूरीजी,पंन्यास श्रीजितरत्न विजय जी, पंन्यास श्री सौम्यांगरत्न विजयजी, पंन्यास श्री यशरत्न विजयजी आदि 36 साधु भगवंतों का चार्तुमास संघ स्थापना के 42 वर्षो में प्रथम बार हो रहा है। पूज्यश्री के आज्ञानुवर्तीय प्रवृर्तिनी साध्वीश्री पुण्यरेखा श्रीजी आदि 30 साध्वी भगवंत बहिनों को आराधना करवायेंगे। आध्यात्मिक चार्तुमास का मंगल प्रवेश 7 जुलाई अषाढ़ सुद-2 को हुआ। आचार्यश्री रश्मिरत्नसूरीजी ने बताया कि चार्तुमास में जप, खप व तप का त्रिसूत्री कार्यक्रम चलाया जायेगा। जप में घर-घर गुणरत्न नवकार लेखन करवाया जायेगा। प्रतिदिन दो प्रवचन, उपवाचना, रविवार को रामायण प्रवचन होंगे। तप में समस्त सूरत के आराधकों के लिये सामूहिक मासक्षमण तप करवाये जायेंगे। मेरा मासक्षमण, दीक्षा दानेश्वरी गुरुदेव के चरणों में अर्पित की, मंगल भावना के साथ अब की बार 451 मासक्षमण ''हर घार मासक्षमण, घार-घार मासक्षमण, अब की बार मासक्षमण स्वीकार'' का श्लोगन सूरत के घर-घर में गुंजने लगा है। प्रभुवीर का 2550 वां निर्वाण वर्ष है, प्रभु पार्श्व का 2800 वां निर्वाण वर्ष है, प्रभु पार्श्व का 2900 वां जन्म कल्याणक वर्ष है, यह सब योगानुयोग है। 22 जुलाई से मासक्षमण का प्रथम राउण्ड शुरु हुआ। तीन राउण्ड होंगे। अन्य आयोजनों में पर्युषण बाद 13 सितंबर को समस्त सूरत में वर्धमान तप के पाये, 12 अक्टूबर से गुरु राम पावन भूमि में भव्य उपधान तप प्रारंभ होगा। चार्तुमास बाद समूह दीक्षा, पालीताना से गिरनार व गिरनार से पालीताना छः रिपालक संघ, तीन छोटे संघ व शंखेश्वर में चैत्र मास की ओली होगी।

पिपली बाजार में जोरदार प्रवेश हुआ

इन्दौर- पूज्यपाद श्रीजैनाचार्य श्री मुक्तिसागर सूरीजी एवं आचार्य देव श्री अंचल मुक्ति सागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री अर्बुज गिरी जैन श्वेतांबर उपाश्रय इन्दौर में हो रहा है 14 जुलाई को चार्तुमासिक प्रवेश जोरदार हुआ अनेक श्रीसंघ केश्रावको की उपस्थिति रही। चार्तुमासिक आराधना के अंतर्गत अनेक विविध तप,जप,अनुष्ठान महोत्सव के आयोजन की बड़ी श्रृंखला है। महापर्व पर्युषण दिनांक 31 अगस्त से आरंभ होंगे शांतसुधारस ग्रन्थ पर प्रवचन हो रहे है

कोढवा में गुरु पूर्णिमा महोत्सव मना

पूना- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य पूज्य आचार्य भगवंत श्री विराग सागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा-3 चार्तुमास राजगृही जैन श्वेतांबर श्रीसंघ कोढवा में चल रहा है। 21 जुलाई को गुरु पूर्णिमा महोत्सव के आयोजन में उपकारी गुरु भगवंतों का पुण्य स्मरण किया गया।

मुनिराज श्रीमुनिरत्नसागर का ससंघ डूंगरपुर में प्रवेश

डूंगरपुर- आगामी चार्तुमास को लेकर मुरिराज श्री मुनिरत्नसागर एवं पवित्ररत्न सागर महाराज का ससंघ रविवार को गाजे-बाजे के साथ डूंगरपुर नगर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। गेपसागर पाल से ओटा स्थित नेमीनाथ जैन मंदिर तक के शोभायात्रा मार्ग पर श्रद्धा एवं भक्ति भाव के साथ श्रद्धालुओं ने मुनि संघ की आगवानी की तथा मुनिसंघ के जयकारों से समूचा क्षेत्र गूंज उठा।

जीवन जीने की कला को जानने गुरु शरण जाएं

नेमीनाथ मंदिर के प्रवचन हॉल में धर्मसभा हुई। मुनि पवित्र रत्नसागर महाराज ने धार्मिष्ठों से कहाकि - हमारी भरतीय संस्कृति का समुचे विश्व में अपनी एक अलग पहचान है। हमारी संस्कृति में हमें जो कुछ प्राप्त हुआ है वह हमारा अंतिम लक्ष्य नहीं है अपितु हमें सदैव कर्मशील बने रहने की सीख हमारी संस्कृति प्रदान करती है। पुण्योदय एवं सुख के समय में हमें कैसा जीवन जीना है तथा जीवन जीने की कला को जानने को लेकर उसे गुरु की शरण में जाना होगा। गुरु ही वह व्यक्ति है जो परमात्मा से आपको मिलाने तथा जीवन को सफल बनाने का मार्ग प्रशस्त करता है।

गुरु पूर्णिमा पर विशेष प्रवचन का आयोजन

राजगढ- सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री मग्नवृता श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास मं गल श्री नवरत्न आराधना भवन में हो रहा है 21 जुलाई को गुरु पूर्णिमा पर विशेष प्रवचन का आयोजन किया गया।

सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति का वालकेश्वर में चार्तुमास प्रवेश गरिमापूर्ण रहा

मुंबई- सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति वचनसिद्ध जैनाचार्य पूज्यपाद श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा एवं उपाध्याय श्री विनीत सागरजी म.सा., मुनिराज श्री देवप्रभ सागरजी म.सा., वर्धमान तपोनिष्ठ मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. एवं मुनिश्री विनम्रसागर जी म.सा.आदि साधु-साध्वी मंडल का चातुमार्सिक प्रवेश प्रजेन्ट पैलेस श्रीसंघ में दिनांक 7 जुलाई को गरिमामय रहा। गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश के गुरु भक्तों का आगमन प्रवेश पर चार-चांद लगा दिये। प्रवेश के बाद भव्य धर्मसभा का आयोजन किया गया। प्रखार प्रवचनकार मुनिश्री विनम्रसागरजी ने गरिमामय उद्बोधन के साथ कार्यक्रम को सुन्दर रुप से संचालित किया। इस अवसर पर चार माह के लिये साधर्मि क भक्ति का लाभ भी दिया गया। आगमोद्धारक सम्पादक डॉ. सुभाष जैन ने प्रासंगिक उद्बोधन दिया। कार्यक्रम सम्पन्न होने के बाद श्री पार्श्वनाथ जिनमंदिर में पूज्य श्री की निश्रा में चार्तुमास के विभिन्न अनुष्ठान की सफलता के लिये 108 श्रीफ ल श्रावक-श्राविकाओं के द्वारा चढ़ाये गये।

वागड़ नरेश ने चार्तमासिक आराधना के लिये श्रीाध्दिक्षेत्र में प्रवेश किया

अहमदाबाद- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के तीसरे सुशिष्य पूज्य आचार्य देवेश श्री मृदुरत्न सागर सूरीजी महाराज मुनिश्रीमोक्षरत्न सागरजी,मुनिश्रीपद्म रत्नसागरजी की निश्रा रही।दिनांक 19 जुलाई को चार्तुमास प्रवेश श्रीसिध्दाचल महातीर्थ पालीताना में साबरमती धर्मशाला में भव्य सामैया के साथ हुआ आयोजित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में गुरुभक्त जुड़े मालवा से भी बडी संख्या में गुरुभक्त आये थे। लगभग 250 आराधको का 2 महिने का चार्तुमास आपकी निश्रा में हरे रहा है चार्तुमासिक आराधना के अंतर्गत अनेक विविध तप, जप, अनुष्ठान महोत्सव के आयोजन की बड़ी श्रृंखला है।महापर्व पर्युषण दिनांक 31 अगस्त से आरंभ होंगे। उपधान तप की आराधना होगी **चार्तुमास के लाभार्थी श्रीमती सम्पत्तबाई बापूलालजी चौधरी परिवार जीरण(नीमचवाले) है। चार्तुमास साबरमती धर्मशाला में होगा।**

श्रीश्राध्दविधि ग्रंन्थ पर प्रवचन आरंभ

उज्जैन- सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री चारुधर्मा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास मं गल प्रवेश 11 जुलाई को श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ चौमुखी जैन मंदिर, सुभाषनगर, उज्जैन में हुआ 20 जुलाई से श्री श्राध्दविधि ग्रंन्थ के साथ श्रीविक्रमादित्य चरित्र पर प्रतिदिन प्रवचन हो रहे है।

कौन क्या है

- ❊ चार्तुमास एक Semester है।
- ❊ आगम हमारा Syllabus है।
- ❊ जिनवाणी हमारी Study है।
- ❊ साधु-संत हमारे Teacher है।
- ❊ धर्मसभा हमारी Class है।
- ❊ श्रावक हमारे Classmate है।
- ❊ नवरत्न हमारे -Lesson है।
- ❊ सेवा हमारे Practicals है।
- ❊ आचरण हमारी Exam है।
- ❊ परमात्मा हमारे Examiner है।
- ❊ कर्म हमारे Percentage है।
- ❊ गति हमारा Result है।
- ❊ दुनिया में ज्ञान-विज्ञान की यह सबसे बेहतर University है।

बंधु त्रिपुटी मुनि का चार्तुमास पवेश गदक हुबली में हुआ

हुबली- जैनाचार्य अपूर्व मंगल रत्नसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल के बंधु त्रिपुटी मुनि प्रवर श्री आगम प्रश्म- व्रजरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा का जोरदार चार्तुमास प्रवेश हुआ। मालवा के श्रावकों का आगमन भी हुआ था चार्तुमासिक आराधना के अंतर्गत अनेक विविध तप, जप, अनुष्ठान महोत्सव के आयोजन की बड़ी श्रृंखला है। महापर्व पर्युषण दिनांक 31 अगस्त से आरंभ होंगे आपका चार्तुमास श्री पार्श्वनाथ जैन मंदिर, गौरीशंकर लॉज के सामने, स्टेशन रोड़, गदग (हुबली) कर्नाटक में हो रहा है।

सारे देश में गुरु भगवंत-साध्वीजी के प्रवेश के साथ चातुमार्सिक आराधना का मंगल शुभारंभ हुआ

उज्जैन- वर्षो पुरानी परम्परा के अनुसार देशभर के जैन श्री संघों में गुरु भगवंतों के चार्तुमास प्रवेश के साथ ही चातुमार्सिक आराधनाओं का मंगल शुभारंभ हो गया है । तपागच्छ, खतरगच्छ, त्रिस्तुतिक, स्थानकवासी आदि सभी जैन समुदाय के साधु-साध्वी देश के विभिन्न श्री संघों में चार्तुमास हेतु विराजित हो गया है । चातुमार्सिक आराधना का शुभारंभ आषाढ़ सुदि-14 दिनांक 20 जुलाई शनिवार से हो गया है, जो निरंतर चार-माह तक कार्तिक सुदि-पूनम, शुक्रवार दिनांक 15 नवंबर तक चलेगा।भादवा वदी-13 दिनांक 31 अगस्त 2024 महापर्व पर्युषण की आराधना आरंभ होगी तथा संवत्सरी महापर्व पर महा प्रतिक्रमण भादवा सुदि-4 दिनांक 7 सितंबर के साथ पूर्ण होगी।

इसी बीच दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप संबंधी अनेक आराधनाएं, क्रियाएं भी इन चार माह में होगी। महा मंगलकारी चार माह के चार्तुमास में आने वाले समय में अनेक कार्यक्रमों का भी निर्धारण हो जायेगा। छःरिपालित संघ अंजन-प्रतिष्ठा, दीक्षा पदवी जैसे अनेक महात्वपूर्ण शासन प्रभावक कार्यो को अंतिम रुप दिया जायेगा।

साध्वीश्री पुनीतदर्शनाजी ने 500 आयंबिल का पारणा जैनाचार्य श्री अशोकसागरसूरीजी की निश्रा में किया

पालीताना- श्री जंबुद्वीप परिसर में चार्तुमास की आराधना के लिये विराजित पूज्यपाद आचार्यदेवेश श्री अशोकसागर सूरीजी महाराजा आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में साध्वीवर्या श्री पुनीत दर्शनाश्रीजी म.सा. का 500 आयंबिल का पारणा 13 जुलाई को सम्पन्न हुआ। इस मंगल प्रसंग पर 10 से 13 जुलाई तक आयोजित आयंबिल पारणा महोत्सव में शक्रस्तव अभिषेक, श्री तपागच्छ अधिष्ठायक देव श्री माणिभद्र वीर की पूजन व हवन तथा श्री सिद्धचक्र महापूजन पढ़ाई गई। दिनांक 13 जुलाई को सामुहिक रुप से चतुर्विध संघ के साथ तलेटी दर्शन के बाद तस्वीरत्ना साध्वीजी का पगला और पारणा सम्पन्न हुआ। इस प्रसंग पर पूज्यपादश्री अशोकसागर सूरीजी, श्री चन्द्रशेखर सागर सूरीजी, श्री सौम्यचन्द्रसागर सूरीजी, श्री विवेकचंद्रसागर सूरीजी, श्री मृदुरत्नसागर सूरीजी, प्रर्वतक श्री विश्वशेखरसागरजी, प्रर्वतक श्री दिव्य शेखरसागरजी, प्रर्वतक श्री धैर्यचंद्र सागरजी, गणिवर्य श्री तीर्थचंद्र सागर जी, श्री मोक्षचंद्रसागरजी आदि ठाणा के साथ विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंत की निश्रा रही।

❊ मिथिला नगरी के महानंदा परिव्राजक ने जीवन के तीन पन कठिन तपश्चर्या में बिताए । जप, तप, आसन, प्राणायाम, स्वाध्याय, यज्ञ, कीर्तन, मार्जन, तर्पण करते-करते असंख्य सिद्धियां करतलगत कर लीं । असाधारण क्षमता वाले मुनि महानंदा की ख्याति चंद्रमा के प्रकाश की तरह विकसित होने लगी । सैकड़ों व्यक्ति उनकी सिद्धियों का लाभ पाने लगे । सैकड़ों व्यक्ति प्रतिदिन पहुंचते और श्रीचरणों में सिर रखकर महासुख अनुभव करते, किंतु मुनि का अंतःकरण स्थिर न था । सिद्धियों ने उनकी तृष्णा तो बढ़ा दी, पर वह शांति न मिली, जिसके लिए मुनि ने घर, परिवार और स्नेहियों, संबंधियों का साथ छोड़ा था ।

एक दिन महानंद इसी दुःख से भरे अपनी कुटिया से निकले और एक गांव की ओर चल पड़े। वे गांवों में पहुंचे ही थे कि किसी के कराहने का स्वर सुनाई दिया । कोई बीमार था, देखने वाला कोई न था, बड़ी पीढ़ा बढ़ गई थी, उस व्यक्ति की दरद भरी कराह-मुनि के हृदय में उतर गई, उन्होंने बीमार की रात भर सेवा की । दवा दी, पॉव दाबे, बिस्तर बदले, टट्टी और पेशाब धोया । चौथे पहर जब उसे नींद आई तब मुनि आश्रम लौटे । आज मुनि को जीवन का सत्य और सिद्धि का सच्चा आनंद मिला ।

आगमोद्धारकश्री के जन्म अर्धशताब्दी वर्ष में 150 दिन तक गुरु गौरवगान के साथ विविध आयोजन की श्रृंखला

मुंबई-जैन जगत को आगम का अभूतपूर्व वारसा देननेवाले आगमवेत्ता पूज्यपाद आचार्यदेव आगमोद्धारक श्री आनंदसागरसूरीजी महाराजा के जन्म अर्ध शताब्दी वर्ष में भारत भर के श्री संघों में 150 दिन तक पूज्यश्री के जीवन प्रसंगों आगम के संबंध से अनेकाविध आयोजन होंगे। जन्म दिन 4 अगस्त, सांवन की अमावस्या के शुभ प्रसंग पर त्रिदिवसीय महोत्सव के आयोजन की प्रेरणा पूज्यपाद सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा की ओर से की गई है। प्राचीन और अर्वाचिन आगम वाचना की ऐतिहासिकता की जानकारी के साथ 45 आगम पूजन तथा आगम रथयात्रा का और पूज्यश्री गौरव कीर्तिगाथा के लिये भव्य गुणानुवाद सभा के आयोजन होंगे। श्राविकाओं, बच्चों के लिये नाटक, प्रश्न प्रतियोगिता, गहुंली, रंगोली आदि आयोजन श्री संघ में करने की प्रेरणा दी है। 150 दिवसीय आयोजन में जहां सागर समुदाय के गुरु भगवंतों, साध्वी भगवंत चार्तुमास में विराजमान है वहां विशिष्ट आयोजन करने की प्रेरणा दी गई है। 45 आगम पर आधारित वाचना तथा आगम महापूजन के आयोजन के साथ पूज्य आगमोद्धारकश्री के जीवन चारित्र से अवगत करानेवाले चित्रों की प्रदर्शनी भी लगाने की प्रेरणा दी गई है।

मातृ हृदया साध्वीवर्या श्री अमितगुणाश्री का उज्जैन चार्तुमास प्रवेश गरिमापूर्ण रहा

उज्जैन- श्री ऋषभदेव छगनीराम तीर्थ पेढ़ी पर मालवा की सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री अमितगुणा श्रीजी साध्वीश्री अमिझराश्रीजी आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश दिनांक 15 जुलाई को सम्पन्न हुआ। महिला मंडल की उपस्थिति के बीच साफे पहनकर श्रावक और श्राविका द्वारा सजधज कर प्रवेश को जोरदार बना दिया। मालवा के साथ भोपाल आदि अनेक श्री संघों के धर्मिष्ठों का आयोजन इस प्रसंग पर हुआ था। धर्मसभा में गुरु भक्तिगीत से वातावरण आनंदमय बन गया। अनेक श्रावकों और श्राविकाओं ने पूज्यश्री के जीवन के प्रसंगों का उल्लेख उद्बोधन में किया। डॉ.सुभाष जैन, आगमोद्धारक सम्पादक ने प्रारंभिक उद् बोधन किया । चार्तुमासिक आराधना के अंतर्गत अनेक विविध तप, जप, अनुष्ठान महोत्सव के आयोजन की बड़ी श्रृंखला है। 25 जुलाई से श्री योगविधि शास्त्र ग्रंन्थ के साथ श्रीविक्रमादित्य चरित्र पर प्रतिदिन प्रवचन हो रहे है। दोनों शास्त्र व्हराने का लाभ डॉ.सुभाष जैन, आगमोद्धारक सम्पादक आगमोद्धारक परिवार सुनीता, अर्पिता आदेश, वीरांश जैन आदि ने लिया

जैनाचार्य श्री सागरचंदसागर सूरीजी का आगम मंदिर में प्रवेश हुआ

पालीताना- प्रवचन प्रभावक प. पू. आ.श्री सागरचन्द्रसागर सूरीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश अनंत सिद्धो की भूमि पालीताना महातीर्थ के श्री आगम मंदिर में सम्पन्न हुआ। चार्तुमास प्रवेश यात्रा शासन प्रभावक प.पू.आ.श्री अशोक सागर सूरीश्वरजी म.सा. सहित अनेक आचार्य भगवंतों एवं साधु साध्वीवृंदों की पावन निश्रा में बनासकांठा धर्मशाला से प्रारंभ होकर जय तलेटी पर गिरिराज वंदना के पश्चात आगम मंदिर के स्वाध्याय हॉल में धर्मसभा में परिवर्तित हुई। धर्मसभा में शासन प्रभावक प.पू. आ.श्री अशोक सागर सूरीश्वरजी म.सा. के द्वारा मार्मिक एवं तात्विक प्रवचन दिया गया। प्रवचन प्रभावक प.पू.आ.श्री सागरचन्द्र सागर सूरीश्वरजी म.सा. ने कहा- इस वर्ष चार्तुमास में 108 श्रीआदिनाथ भगवान के तप के साथ प्रवचन, तात्विक वाचना का आयोजन होगा, 13 अक्टूबर से 47 दिन तक चलनेवाले उपधान तप का आयोजन होगा। पूज्य आचार्यश्री के जन्म दिवस दिनांक 20 नवंबर से सिद्ध गिरिराज की नवांणु यात्रा का आयोजन भी होगा।

अवश्य ही इस जीव को प्रथम सब साधनों को गौण मानकर, निर्वाण के मुख्य हेतु रुप ऐसे सत्संग की ही सर्वार्पणभाव से उपासना करना योग्य है कि जिससे सब साधन सुलभ हो जाते हैं- ऐसा हमारा आत्मसाक्षात्कार है ।

साध्वी ऋजुप्रिया श्रीजी म.सा. का देवलोक गमन

इन्दौर के तिलकनगर संघ में सागरानंदसूरी समुदायवर्तिनी सा.दमिता श्रीजी म.सा. की शिष्या एवं सा. मुक्तिप्रिया श्रीजी, सा. मृदुप्रिया श्रीजी, हर्षप्रियाश्रीजी म.सा. के माताजी महाराज सा. ऋजुप्रिया श्रीजी म.सा. का ज्येष्ठ वदि-पंचमी 28 मई को रात्रि 9.40 पर नमस्कार महामंत्र का श्रवण करते हुए 92 वर्ष की उम्र में देवलोक गमन हुआ।

आपका विवाह छोटी सादड़ी के सुसम्पन्न कावड़िया परिवार में हुआ था। आप संसार में रहकर भी जल कमलवत् अनासक्त थी। संयम की अभिलाषी थी।''एक दिन दीक्षा लूंगी, मन में ये भाव।''

इस प्रकार का मनोरथ संजोए हुए थी ? आखिर 64 वर्ष की उम्र में समस्त पारिवारिक जिम्मेदारियों को परिपूर्ण करके एवं पति, पुत्र, पौत्र के मोह एवं ममत्व का परित्याग करके मालव भूषण प.पू.आ.श्री नवरत्नसागर सूरिश्वरजी म.सा. के वरद् हस्तो से ''भोपावर तीर्थ'' में संयम का अंगीकार किया। जब आपके हाथों में रजोहरण आया आपका रोम-रोम पुलकित हो रहा था एवं आपके अन्तर में आनन्द नहीं समा रहा था। आपके सुंदर संस्कारों की वजह से दो पुत्रियों ने पूर्व में ही संयम स्वीकार कर लिया था। सा. हर्षप्रिया श्रीजी ने आपके साथ संयम लिया था। दीक्षा के दिन ही आपने आजीवन मावा, कड़ाई, विगय, दही एवं आम त्याग का संकल्प लिया था।

आपको संयम एवं सिद्धाचल से अत्यधिक अनुराग था जो भी आपके संपर्क में आता आप उन्हें यथावश्यक व्यावहारिक ज्ञान देकर छोटे-छोटे यम नियम लेने की प्रेरणा देते थे।

आपका हृदय सरल एवं स्फटिक की भांति स्वच्छ था। आप माया और कपट से सर्वथा दूर थे। किसी साध्वी से गलती होने पर डॉट-फटकार भी लगाते थे लेकिन शाम को पुनः मिच्छामि दुक्कड़म कहकर क्षमा याचना कर लेते थे।

अंतिम समय में आपका स्वास्थ्य खराब होने से आप इन्दौर में विराजित थे। जेठ वदी पंचमी को प्रतिक्रमण के बाद संथारा पोरसी पढ़ाई लेकिन आपकी श्वास की प्रक्रिया थोड़ी तेज हो गई थी, सहवती पुत्री साध्वीजी ने आपको अंतिम आराधना करवाकर संथारा का प्रत्याख्यान करवाया। ''नमो अरिहंताणं'' की धुन लयबद्ध चल रही थी, देखते ही देखते तीव्र श्वास की गति बंद हो गयी। साध्वीवर्या ने इस नश्वर दुनिया से चिर विदायी ले ली। देह वही पड़ा था लेकिन आतम पंखी अनन्त की यात्रा के लिये निकल पड़ा। आपकी आत्मा जहां भी हो, ऐसा संबल प्राप्त हो कि आप रत्नत्रयी की आराधना करके परम लक्ष्य को प्राप्त करें एवं हम सभी पर आर्शीवाद बरसाते रहे।

श्रावण वदी -अमावस्या रविवार दिनांक 04 अगस्त 2024 को पूज्य आगमोद्धारकश्री का जन्म दिवस आ रहा है

यह वर्ष पूज्यपाद आगमोध्दारक श्री सागरानंदसूरीजी महाराजाके जन्म का 150 वां वर्ष है जन्म दिवस श्रावण वदी अमावस्या दिनांक 4 अगस्त 2024 को आपके श्रीसंघ में पूज्यपाद श्री के स्मरण स्वरुप पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन कर गुरु गौरव गाथा के साथ गुणानुवाद सभा करने की प्रेरणा है।

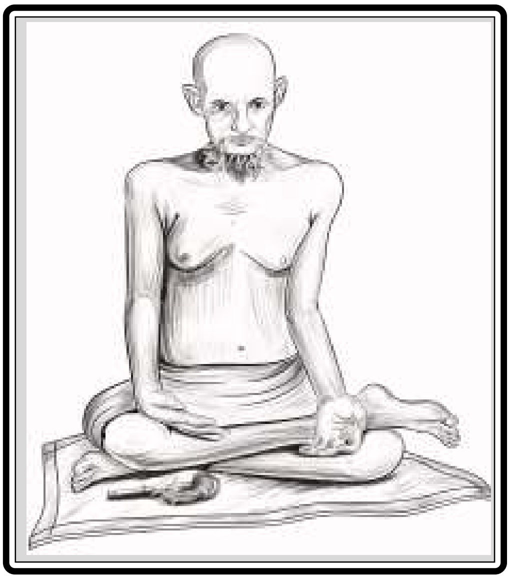

जम्बुद्वीप के मार्गदर्शक जैनाचार्य श्री अशोक सागर सूरीजी का चार्तुमास जम्बुद्वीप में

✻ 99 यात्रा का आयोजन होगा।

अहमदाबाद- अहमदाबाद-81 वर्ष की आयुष्य 63 वर्ष की संयम साधना 27 वर्ष से नवकार महामंत्र के तीसरे पद पर विराजित 126 से अधिक शिष्य-प्रशिष्य संयमी आत्मन् की सम्पत्ति के मालिक 108 फीट श्री आदिनाथ दादा की प्रतिमा के स्वप्न दृष्टा, जम्बुद्वीप के मार्गदर्शक सागर समुदाय के वरिष्ठ जैनाचार्य श्री अशोक सागर सूरीजी महाराजा पूज्य श्री सौम्य चंद्र सागर सूरीजी आदि विशाल संख्या में साधु साध्वीवृंद की अमृत निश्रामें आपश्री का चार्तमास पालीताना जम्बुदीप में हो रहा है आपकी निश्रा में 99 यात्रा का आयोजन पालीताना में दिनांक 18 नवंबर से आरम्भ होगा। 99 यात्रा की पूर्णाहुति 6 जनवरी 2025 को होगी। पूज्यपाद आचार्यदेव श्री सागरचंद्रसागरसूरीजी महाराज का सानिध्य भी रहेगा। साध्वीवर्या श्री विहितमाला श्रीजी म.सा. की मुख्य प्रेरणा है। आयोजन जंबुद्वीप से संचालित होगा। आयोजक संघवी शिल्पा बहन दिनेशचंद्र आदि वडेया परिवार है।

श्री पार्श्वनाथ मंदिर के लिये भूमिपूजन शिलान्यास हुआ

पिपल्याजति- अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक शासनरत्न श्री मनोजकुमार बाबुमलजी हरण की प्रेरणा और मार्गदर्शन में श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जिन मंदिर के जीर्णोद्धार के लिये भूमि पूजन तथा शिलान्यास का आयोजन दो दिवसीय महोत्सव के अंतर्गत 18 एवं 19 जुलाई को हुआ। परमात्मा के अभिषेक तथा शिलाओं के वरघोड़े के बाद शिलास्थापना की क्रिया विधि सम्पन्न हुई।

✻ पूर्व निष्पन्न शुभ-अशुभ कर्म के अनुसार दोनों को उदय रहता है। ज्ञानी उदय में सम रहता है, अज्ञानी को हर्ष-विषाद होता है।

हुबली में आनंदभ्युदय चार्तुमास हेतु युगलबंधु जैनाचार्य का प्रवेश जोरदार रहा

हुबली -जैनाचार्य वाणी के जादूगर पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागरसूरीजी महाराज आयंबिल तप की 271 वीं ओलीजी आराधक जैनाचार्यश्री चन्द्र रत्न सागर सूरीजी म.सा. मुनिश्रीचैत्यरत्न सागर जी मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनिश्री पवित्ररत्नसागरजी म.सा. मुनि श्री गोयम सागरजी म.सा. के साथ साध्वीवर्या श्री भावपूर्णाश्रीआदि ठाणा का हुबली में चार्तुमास प्रवेश जोरदार रहा है। मालवा के श्रावक का आगमन भी हुआ था चार्तुमासिक आराधना के अंतर्गत अनेक विविध तप, जप, अनुष्ठान महोत्सव के आयोजन की बड़ी श्रृंखला है। महापर्व पर्युषण दिनांक 31 अगस्त से आरंभ होंगे। **हुबली के मरुधर श्रीसंघ आपश्री का चार्तुमास में होन रहा है।**

श्री जीरावला पार्श्वनाथ में पौष दशमी पर 108 अट्ठम तप का आयोजन सागर गच्छाधिपति की निश्रा में होगा

✻ 2025 में पालीताना चार्तुमास होने की संभावना।

मुंबई- सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति वचनसिद्ध जैनाचार्य पूज्यपाद श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजावर्धमान तपोनिष्ठ मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. आदि साधु-साध्वीजी की अमृत निश्रा में श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जन्म-दीक्षा कल्याणक पौष दशमी पर विश्व विख्यात श्री जीरावला पार्श्वनाथ प्रभु के महातीर्थ जीरावला में 1008 अट्ठम तप का आयोजन किया जायेगा। वाव निवासी गुरुदेव के परम भक्त ने चार्तुमास प्रवेश पर यह घोषणा की। आयोजन की रुपरेखा लगभग तैयार हो गई है। वर्ष 2025 का चार्तुमास पूज्यश्री लगभग पालीताना श्री सिद्धक्षेत्र में ही करेंगे। इसकी भी तैयारी चल रही है।

आचार्यश्री पूर्णचन्द्रसूरीजी की निश्रा में गिरनार नव्वांणु यात्रा का आयोजन

गिरनार- श्री कलापूर्ण समुदाय वर्तीय पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री पूर्ण चन्द्र सूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा की निश्रा में पूज्य मुनिश्री प्रशमलब्धि विजयजी म.सा. की प्रेरणा से गिरनार नव्वांणु यात्रा का आयोजन होने जा रहा है। नव्वांणु यात्रा का शुभारंभ दिनांक 11 नवंबर को होगा एवं यात्रा की पूर्णाहुति दिनांक 25 दिसंबर को होगी। यात्रा का आयोजन श्री नेमि जिन श्वेतांबर जैन धर्मशाला से होगा। इसके पूर्व पूज्यश्री की निश्रा में वंथली से गिरनार का छःरि पालित यात्रा आयोजित होगी।

श्री शंखेश्वर से गिरनार महातीर्थ का छःरि पालित संघ लगभग एक महिने का रहेगा।

जूनागढ़- श्री सिद्ध सावन कल्याणक भूमि तीर्थोद्धार समिति के द्वारा श्री शंखेश्वर से श्री गिरनार महा तीर्थ का छःरि पालित यात्रा संघ का आयोजन होने जा रहा है। पूज्य आचार्य भगवंत श्री धर्मरक्षितसूरीजी एवं श्री हेमवल्लभ सूरीजी आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी की निश्रा में श्री शंखेश्वर से श्री गिरनार महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ आयोजित होने जा रहा है। श्री शंखेश्वर से संघ का प्रयाण 21 नवंबर को होगा, यहां से 29 नवंबर को बढ़वाण आगमन होगा। दिनांक 30 नवंबर को बढ्वाण से आरंभ होगा। दिनांक 12 दिसंबर को जेतपुर से चलकर 17 दिसंबर को गिरनार पहुंचकर संघ माल होगी।

आध्यात्मिक योगी का गृह नगर अहमदाबाद में यादगार चार्तुमास प्रवेश हुआ

✻21 जुलाई को गुरुपूर्णिमा महोत्सव मना उपधान तप होगा

भोपावर- पूज्यपाद आचार्य देवेश मालव भूषण श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के प्रशिष्य पूज्यपाद गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा श्रमण-श्रमणीवृंद की अमृत निश्रा में चार्तुमास प्रवेश 14 जुलाई को श्री मुनिसुव्रत स्वामी जैन श्री संघ में हुआ कार्यक्रम में बड़ी संख्या में गुरुभक्त जुड़े मालवा से भी बडी संख्या में गुरुभक्त आये थे। चार्तुमासिक आराधना के अंतर्गत अनेक विविध तप, जप, अनुष्ठान महोत्सव के आयोजन की बड़ी श्रृंखला में होगें।महापर्व पर्युषण दिनांक 31 अगस्त से आरंभ होंगे। उपधान तप का आयोजन भी होने जा रहा है उपधान तप का प्रथम मुर्हूत दिनांक 13 अक्टूबर तथा द्वितीय प्रवेश 15 अक्टूबर को होगा। तपस्वियों की शोभायात्रा के बाद माल परिधान 2 दिसबंर को होगा। आयोजक सरयु बहन हसमुखभाई न्यालचंद बोरा परिवार है।

श्री गिरनार में चार्तुमास एवं उपधान तप

गिरनार- श्री गिरनार महातीर्थ में पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जिनेशरत्न सूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास गिरनार दर्शन धर्मशाला में होने जा रहा है। चार्तुमास प्रवेश दिनांक 19 जुलाई को हुआ। महापर्व आराधना दिनांक 31 अगस्त से 7 सितंबर तक होगी। उपधान तप का प्रथम मुर्हूत दिनांक 13 अक्टूबर तथा द्वितीय प्रवेश 15 अक्टूबर को होगा। तपस्वियों की शोभायात्रा 29 नवंबर को तथा माल परिधान 30 नवंबर को होगा। आयोजक गांधी परिवार है।

श्री नाकोड़ा में उपधान तप

नाकोड़ा- जिनशासन के विश्व विख्यात तीर्थ श्री नाकोड़ा में आचार्य देवश्री नयचंद्रसागरसूरीजी महाराज के सुशिष्य मुनिश्री सुमतिचंदसागरजी एवं मुनिश्री शीतलचंद्रसागरजी म.सा.आदि ठाणा-2 की निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की क्रिया उपधान तप का आयोजन प्रथम मुर्हूत दिनांक 15 दिसंबर तथा द्वितीय मुर्हूत दिनांक 17 दिसंबर से आरंभ हो रहा है। उपधान तप की माल तथा रथयात्रा का आयोजन 2 फरवरी 2025 को होगा। आयोजक श्री उवसग्गंहरम आराधक परिवार है।

✻ आज लोग बिना श्रम किये चमत्कार पाना चाहते हैं। वास्तव में चमत्कार वहीं होता है, जहां सच्चे हृदय से नमस्कार किया जाता है।

हमारे तीज-त्यौहार

1- श्रावण वदी-30	रविवार	4/8/2024	पूज्यपाद आगमोद्धारकश्रीजी का 150 वां जन्मदिन
2- श्रावण सुदी-5	शुक्रवार	9/8/2024	श्री नेमिनाथ प्रभु का जन्म कल्याणक मासक्षमण घर
3- श्रावण सुदी-6	शनिवार	10/8/2024	श्री नेमिनाथ प्रभु का दीक्षा कल्याणक
4- श्रावण सुदी-8	मंगलवार	13/8/2024	श्री पार्श्वनाथ प्रभु का निर्वाण कल्याणक
5- श्रावण सुदी-15	सोमवार	19/8/2024	रक्षा बंधन सांस्कृतिक पर्व
6- भादवा वदी-5	शनिवार	24/8/2024	पन्द्रह का घर
7- भादवा वदी-9	मंगलवार	27/8/2024	रोहिणी
8- भादवा वदी-13 (1)	शनिवार	31/8/2024	अट्ठाई घर पर्युषण आरंभ

पुष्प नक्षत्र :- **आरम्भः**–श्रावण वदी-14, शनिवार, दिनांक 3/8/2024, समय-12.00 बजे
समाप्तः–श्रावण वदी-30, रविवार, दिनांक 4/8/2024, समय-13.16 बजे

पंचक :- **आरम्भः**–श्रावण सुदी-15, सोमवार, दिनांक 19/8/2024, समय-19.01 बजे
समाप्तः–भादवा वदी-4, शुक्रवार, दिनांक 23/8/2024, समय-19.55 बजे

पुष्प नक्षत्र :- **आरम्भः**–भादवा वदी-12, शुक्रवार, दिनांक 30/8/2024, समय-17.57 बजे
समाप्तः–भादवा वदी-13 (1), शनिवार, दिनांक 31/8/2024, समय-19.40 बजे

अट्दस-दोस-रहिओ देवो धम्मो य
निउणदयसहिओ ।
सुगुरु वि बंभयारी आरंभपरिग्गहा विरओ ॥
- श्री संबोधर सत्तरी ग्रंथ

अर्थात्- सुदेव वह है जो अट्ठारह दोषों से रहित हो, सद्धर्म वह है जो सूक्ष्म दया से युक्त हो और सद्गुरु वह है जो हिंसा एवं परिग्रह से मुक्त तथा ब्रह्मचारी हो ।

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें ।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें ।

आगमोद्धारक का सितंबर 2024 का अंक
"पर्युषण महापर्व विशेषांक"
रहेगा। आपकी रचनाएं भेजिए।

सादर आमंत्रण

✲ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✲ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✲ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✲ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें ।

- सम्पादक

वर्ष 29 | श्रावण-भादवा | अगस्त - 2024 | अंक 08 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर एन आई. नं 0048570/29/30/1982
पोस्टल मालवा डिवीजन पी आर एन नं एम डी. 08/2024-2026

डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, लालीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash 3333@yahoo.co.in. subhashjain@gmail.com

प्रति,
बुक पोस्ट
श्रीमान्

स्टाम्प
टिकिट

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 265, एम.जी.रोड, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897